पंचम अध्याय
यशपाल की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ

प्रेमचंद के बाद यशपाल सही अर्थों में जनसाधारण के लिए हिंदी कथा साहित्य का प्रतिनिधित्व करते है। उनकी उचनाएँ एक ओर साहित्यिकों के लिए तो दूसरी ओर जनता के लिए भी आकर्षक है। १९ वी शताब्दी में सामान्यत: और २० वी शताब्दी में विशेषत: धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्रांतियों के फलस्वरूप नारी में नवजागरण और स्वाभिमान की भावनाएँ पुन: अंकुरित हो रही थी। इसके परिणाम स्वरूप यशपाल की कहानियों में आधुनिकता का पुट अधिक मात्रा में दिखायी देता है। इसका कारण है उनपर आधुनिकता की गहरी छाप है और साथ ही मार्क्सवादी चिंतन का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। यशपाल ने प्रेमचंद परंपरा को अधिकतर समृध्द किया है, उसे नया आयाम दिया है। इस कहानी धारा को यशपाल ने नया मोड दिया। इसलिए यशपाल जब सामाजिक समस्याओं को उठाते है तो इनके समाधान प्रेमचंद की तरह किसी आश्रम, सदन या निकेतन की स्थापना में न खोजकर समस्त सामाजिक विधान में ही खोजते है। इसलिए वे

इसके आर्थिक आधार पर ही अधिक प्रहार करते है ।

यशपाल की कहानियों में प्राचीन कथाकारों की भाँति नारी समस्या सामाजिक समस्या से अलग की चीज नहीं है । उनके कुछ नारी पात्र प्राचीन समस्याओं पर नये ढंग से विचार करते है और अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करते है । यशपाल के काल में दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति, बहुविवाह का उन्मूलन करने और सदन या आश्रम स्थापित करने की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि पुरूष के साथ नारी के अधिकारों के संचरण की आवश्यकता थी । इन्ही आधारों पर यशपाल ने अपने नारी पात्रों का विकास किया है ।

नारी और प्रेम :

प्रेम एक व्यापक और मधुर भावना है जो प्रत्येक स्त्री-पुरूष को अपनी ओर आकर्षित करती है । मनुष्य जाति के जन्म से आज तक इस विषय को लेकर सभी देशों में, सभी जातियों में, सभी भाषाओं में बहुत कुछ लिखा गया है । यशपाल ने भी प्रेम के विविध रूपों का यथार्थ चित्रण किया है ।

` समाधि की धूल ` आत्मकथनात्मक शैली में लिखी गयी प्रेम कथा है । इस कहानी में लेखकने एक सच्ची प्रेम कथा चित्रित की है । गाव के नवविवाहित पति-पत्नी बल्लू-चमेली की समाधि के दर्शन करना अपना सौभाग्य मानते थे । उसे पत्थर की पूजा नही बल्कि भाव की आराधना मानते है । पतिया गाव के गरीब माँ बाप का बेटा बल्लू और अमीर राधे साह की लडकी चमेली का प्यार था । पर दोनों के प्यार के बीच खडी थी चाँदी की दीवार । इसी से तंग आकर एक दिन चमेली बल्लू से कहती है, ` इतना ही मेरा प्यार है तो नदी में जाकर डूब मर .... क्या मेरी जग हँसाई कर रहा है ? ` [१]

चमेली के मुंह से यह बात सुनते ही बल्लू क्षण भर के लिए भी वहाँ नहीं रुका और देखते ही देखते वह नदी में कूद पडता है। यह देखते ही चमेली अपने आप को रोक नहीं सकी और उसने भी बल्लू के पीछे-पीछे नदी में छलांग लगायी। दूसरे दिन दोनों के मृत शरीर एक दूसरे के बाहों में लिपटे हुए नदी के किनारे मिले। गाँववालों ने वही पर उनकी समाधि बनायी ` अब जलेश्वर के पूजन के साथ इस समाधि की पूजा होती है। ब्याह के पश्चात घर प्रवेश से पहले नयी आयी बहू के साथ वर ` प्रेमियों की समाधि ` की पूजा करता है। लोगों का विश्वास है, इस से उन में कभी प्रेम-क्षय नहीं होता। जिन घरों में कलह रहती है, वहाँ लोग समाधि की धूल ले जाकर रख लेते है। इससे पति-पत्नी की कलह दूर हो जाती है। `[2] इस प्रकार आदर्श प्रेम का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

` शिव-पार्वती ` कथा कलाकारों के जीवन पर आधारित प्रेमकथा है। इस कथा के माध्यम से यशपाल ने नर-नारी को परस्परावलंबित चित्रित कर मनुष्य की रूढिग्रस्त मनोधारणा पर आघात किया है। मेघा और विशाखा दोनों तक्षक है। अपनी कला के चरम विकास हेतु वे एक-दूसरे का अवगाहन कर मूर्ति बनाते है और देवता के सिंहासन के सम्मुख रखते है। रूढिग्रस्त पुजारी इस कृत्य को पापाचार मान कर राजा से उनके खिलाफ शिकायत करता है। राजा इसे पाप मान कर उन दोनों को हाथी के पाव तले कुचलवा देता है। बाद में मंदिर को शुध्द करने हेतु राजा पूजा का आयोजन करता है। इस समय उपस्थित राजा मेघा और विशाखा की मूर्तियों में होनेवाले विशुध्द सौंदर्य एवं भाव से प्रभावित होकर वंदन करता है। साथ ही इन मूर्तियों की मंदिर में प्रतिष्ठा करने की आज्ञा देता है।

` शिव-पार्वती ` कहानी में जहाँ प्रेम की पवित्रता तथा भव्यता का वर्णन है वहाँ ` करवाव्रत ` कहानी में भारतीय नारी के पातिव्रत की

उदात्तता की चर्चा है। साथ ही नारी द्वारा पुरूष के हृदय परिवर्तन का भी वर्णन किया है। भारतीय नारी पति के सख्त और तीखे व्यवहार के बावजूद भी अगले जन्म में भी यही पति मिले यह कामना करती है और उसके लिए करवाव्रत रखती है। कन्हैयालाल की पत्नी लाजो ऐसी ही महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है। उसका पति उसे बार-बार डाँटता है, फटकारता है, कभी-कभी मारता भी है। इतना सब होते हुए भी लाजो पति से प्रेम करती है। उसके लिए समय पर खाना बनाती है, बिस्तर लगाती है। पत्नी के प्रेम का पता चलने पर कन्हैयालाल अपने कठोर व्यवहार को छोड देता है। उसके व्यवहार में आमूलाग्र परिवर्तन हो जाता है। अगले जन्म में यही पत्नी मिले, इस इच्छा से उपवास करते हुए लाजो से कहता है, 'तुम्हे अगले जन्म में मेरी जरूरत है तो क्या मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है ? या तुम भी व्रत न रखो आज ?'[3] नारी अपने प्रेम से पति का हृदय परिवर्तन किस प्रकार कर सकती है इसकी ओर यशपाल ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

'पराई' कहानी में रखी और पूरन की प्रेमकथा है। दोनो एक दूसरे से प्रेम करते है। रखी को पाने के लिए पूरन अपनी जान देने के लिए भी तैय्यार होता है। लेकिन वही पूरन शादी के बाद रखी को डाँट-फटकार करता है, गाली-गलौच करता है। इतनाही नहीं कभी-कभी मारता भी है। रखी को अपनी इच्छाओं और भावनाओं का गला घोट देना पडता है। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं रहता। 'अपना मन हो तभी हँसते बोलते है, नहीं तो बात-बात पर डाँट देते है।'[4] यह नारी की पराधीनता ही है। लेकिन हमारी भारतीय परंपरा इसी पराधीनता को प्यार का नाम देती है, यही हमारे संस्कार है। इसे स्पष्ट करते हुए लेखक वीरों के शब्दों में कहते है, 'तेरी जितनी परवाह पूरन करता है, उतनी कोई क्या करेगा ? मर्द ने जरा डाँट-डपट न की तो ऐसा मिट्टी का लौंदा मर्द ही क्या ? यह तो मर्दों की

मर्दानगी है, उनका कायदा है। बिल्कुल मिनमिन करे, ऐसे मर्द से तो किराहत उठती है। पागल अपने मर्द की डाँट तुझे बुरी लगती है। तेरी परवाह उसे न हो तो तू कहीं जाये, उसे क्या मतलब ? तू तो उसके दिल का टूकड़ा है। इसी से तुझे पूरन सोने की डिबिया में रखता है। मैं जानती हूँ, ■ तेरी तकलीफ सुन कर पूरन कैसे बेहाल हो जाता है, पर यह सब के सामने कहने लगे तो कैसे काम चले ? हाय, शरम भी तो आती है। अपनी ही चीज को डाँटा भी जाता है। डाँटने क्या किसी और को जायेगा ? जिस पर मरता है उसी को डाँटेगा।'[५]

'जीत की हार' साम्प्रदायिक वातावरण की पृष्ठभूमि पर लिखित प्रेम कहानी है। नाजू एक भोली-भाली मुस्लिम युवती है। तिलोकसिंह नामक हिंदू युवक की ओर वह आकर्षित होती है। दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। तभी अचानक हिंदु-मुस्लिमों में संघर्ष निर्माण होता है। इन संघर्षों की कथा सुनकर गाँव-गाँव में उसकी प्रतिक्रियाएँ दिखायी देने लगती है। तिलोकसिंह भी मुस्लिमों को मारता काटता हुआ गाँव के लोगों के साथ घूमने लगता है। उसकी नजर नाजू पर जाती है। वह उस पर चाकू चलाता है पर सौभाग्य से वह बच जाती है। आगे तिलोकसिंह पर अदालत में मुकदमा चलता है। नाजू अपने प्रेमी को बरी करनेवाली गवाह देकर अपने प्रेम को फिर से सिध्द करती है। इसे स्पष्ट करते हुए यशपाल ने अपना मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। 'नाजू हिंदू नहीं, इस्लाम को भी नहीं जानती, अहिंसा और उदारता नहीं समझती, उसे हिन्दू राज और मुस्लिम राज का भेद नहीं मालूम। वह औरत है, प्यार करना जानती है और प्यार में क्षमा करना जानती है.... उसे कौन हरायेगा ? कितना हार कर भी वह जीत गयी।'[६] नाजू का यह सशक्त चरित्र एक ओर नारी पर होनेवाले अत्याचारों को स्वर देता है तो दूसरी ओर उसकी उदारता एवं सहिष्णुता का परिचय भी देता है।

` मोटरवाली-कायलेवाली ` कहानी आर्थिक परिपार्श्व पर चित्रित नारी के प्रेम की कहानी है। यशपाल ने हमारे सामने नारी के दो रूप प्रस्तुत किये है। जिससे यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि नारी चाहे संपन्न परिवार की हो या निर्धन परिवार की उसके लिए प्रेम की अपेक्षा पैसा ही महत्वपूर्ण है। उसका देवता पैसा है, प्रेम नहीं। रूमा अमीर बाप की एक-लौती कन्या है। वह और उसके माता-पिता भी यही चाहते है कि उसकी शादी वर्मा से हो। लेकिन भाग्य के साथ लाला भानमल का विचार बदल जाता है और वे अपनी लड़की रूमा की शादी विलायत से पास होकर आये एक रियासत के दीवान पुत्र के साथ कर देते है। वर्मा निराश होकर वहाँ से दूर चला जाता है। वहाँ उसकी मुलाकात एक निर्धन कन्या परवन्नू से होती है। वर्मा के मन में उसके प्रति पहले पहले हमदर्दी निर्माण होती है और आगे चलकर यही हमदर्दी प्रेम में बदल जाती है। लेकिन परवन्नू प्रेम की अपेक्षा पेट की आग को महत्व देती है। जवानी तो चली जायेगी, पर बुढापे में क्या होगा ? यह वास्तविकता उसे सोने की कोई चीज माँगने को विवश करती है। पर प्रेम का प्यासा वर्मा इस घाव को बर्दाश्त नहीं कर सकता। वह क्रोध में कह उठता है, ` हाय सोना, हाय रूपया, यह मोटरवाली और कोयलेवाली सब एक है। इनका देवता पैसा है, प्रेम नहीं। `[७] इस प्रकार यशपाल ने वर्मा के द्वारा प्रेम के प्यासे लोगों के भ्रमभंग को स्पष्ट किया है।

` जादू के चावल ` कहानी में यशपाल ने प्रेम की ओर देखने का भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। नैतिकता के झूठे बंधनोंमें अपने ही पैरों पर कुल्हाडी मार लेने वाली भारतीय नारी की स्थिति का चित्रण किया है। मेहर भारतीय परंपरागत नारी का प्रतिनिधित्व करती है तो मिस जिम पाश्चात्य दृष्टिकोण का। यशपाल ने दोनों देशों की नारी जाति की स्थितिका चित्रण कर स्पष्ट करना चाहा है कि भारतीय नारी पराधीन रह कर सामाजिक बंधनों की चपेट में दम घुटकर मरना ही जीवन

मानती है। समाज की पारंपारिक धारणा पर प्रहार करना ही लेखक का उद्देश्य है। पाश्चात्य नारी जीवन के आदर्श को प्रस्तुत करने की चेष्टा लेखक ने की है। मिस जीम का यह वक्तव्य इस की पुष्टि करता है। वह मेहर से कहती है, ` हम किसी को क्या बहकायेंगी ? हम क्या टुकडे की गुलाम है ? तुम्हारी तरह मर्द को खसम बना उसे फँसाए रखने के लिए फंदे डालती-फिरती है ? हमें खुदा ने हाथ-पैर दिये है। हमारी जिंदगी कौन बना बिगाड सकता है ? वह हमसे दोस्ती माँगता है तो हम उससे दोस्ती करती है। हम अपना गुजारा चलाने के वास्ते उससे दोस्ती नहीं करती। ..... तुम अपनी जिंदगी चलाने को मुहब्बत बतायेगा तो तुम छिनाल नहीं। हम कुछ नही माँग कर मुहब्बत देगा तो छिनाल है। हमारा इतना आदमी मुहब्बत करनेवाला है। हम कभी किसी से एक पैसा की परवा नहीं करता। `[8]

कहानी का शीर्षक ` जादू के चावल ` भारतीय नारी की रूढिग्रस्तता का प्रतीक है। जो उसके सर्वनाश का कारण है। उसकी यही शोकांतिका है कि वह अपने एक मात्र पवित्र प्रेम पर जिंदगी की बाजी लगाकर भी बेबस है, ठुकराई जा रही है।

<u>नारी और विवाह</u> :

पुरुष और नारी के पारस्परिक सम्बन्धों में पति-पत्नी संबंध सर्वाधिक स्पृहणीय एवं श्रेष्ठ माना गया है। प्राचीन काल से ही स्त्री और पुरुष ने पारस्परिक आकर्षण का अनुभव किया है और प्राय: विश्व के सभी सभ्य समाजों में, उन्होंने इसे विवाह के रूप में स्थापित किया है। हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों में पत्नी को श्रेष्ठ सहचरी के रूप में स्थान दिया है। परंतु बदलती परिस्थिति, विभिन्न धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के परिवर्तनों के कारण गृहस्वामिनी का रूप धीरे धीरे समाप्त

होने लगा है। परिणामत: नारी पुरुष की आश्रिता, आत्मसम्मान एवं स्वतंत्र व्यक्तित्व से शून्य और पुरुषों से हीन समझी जाने लगी। ऐसे विवाह दु:खपूर्ण तथा असफल रहे।

पहाडी प्रदेशों में होनेवाली पारंपारिक विवाह पध्दतीका ` डायना ` कहानी में यशपाल ने विरोध किया है। सुर्जू देश में रहनेवाली भोली प्रेमिका है। वह पहाडी प्रदेश के युवक पुन्दना से प्रेम करने लगती है। अपने प्रेम की सफलता के लिए वह पुंदना के साथ भाग जाती है। लेकिन पुंदना के घर में आंचलिक रूढियों का प्रभाव होने के कारण सुर्जू को परंपार के अनुसार पुंदना के शेष तीन भाईयों की पत्नी बनने के लिए विवश किया जाता है। इस पुरानी सडी-गली रूढियों से उब्कर सुर्जू झारने में डूब्कर मर जाना पसंद करती है। यशपाल ने पारंपारिक विवाह पध्दति का विरोध करते हुए अज्ञानी और अंधविश्वासी समाज का शोषण करनेवाले पुरोहितों पर करारी चोट की है।

विवाह एक पवित्र संस्कार है। लेकिन इस पवित्रता कि वेदी पर कभी-कभी नारी को अपने आप को कुर्बान करना पडता है। कुल की मान-मर्यादा तथा पति की प्रतिष्ठा के लिए सब मौन होकर सहना पडता है। ` देखा सुना आदमी ` कहानी की तारा ऐसी ही एक नारी है, जो भारतीय विवाह पध्दति का शिकार हो चुकी है। उसका विवाह परंपरा के अनुसार दयाल के साथ होता है। वैसे देखा जाय तो दोनों का वैवाहिक जीवन अच्छा चल रहा है। पर उसमें एक ही कमी है। दुर्भाग्यवश दयाल नपुंसक है, उसमें पुरुषत्व नहीं है। कोई भी स्त्री अपने पति के इस दोष को साफ-साफ बता नहीं सकती। तारा का दु:ख चाहे व्यक्तिगत हो, पर वह बहुतसी नारियों के दु:ख का प्रतिनिधित्व करता है। अगर यही दोष स्त्री में होता तो पुरुष उसे छोडकर दूसरी शादी आराम के साथ कर सकता है। यह हमारी विवाह संस्था का दोष है। यशपाल ने इसकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

नारी और विधवा :

पुरूष के अत्याचारों से नारी पहले से ही पीडित थी किंतु विधवा तो पुरूष और स्त्री दोनों की दृष्टि में पतित थी । सब की सेवा और खुशामद करने के बाद भी वह आदर और सहानुभूति का नहीं, बल्कि घृणा का पात्र समझी जाती थी । विधवा की उम्र जितनी कम होती थी, उस पर अत्याचार भी उतना ही जादा होता था । वह बाल विधवा हो, या निस्संतान युवती, या निराश्रित और अनाथ, किसी भी स्थिति में समाज की दृष्टि में उसका पुनर्विवाह संभव नहीं था । उसके भाग्य में जीवन भर दु:ख भोगना ही लिखा था ।

' वैष्णव ' कहानी में बाल-विधवा की दु:खपूर्ण स्थिति का वर्णन है । भोले पुरोहित की कन्या द्रौपदी का विवाह पाँच वर्ष की अल्पायु में ही किया जाता है । विवाह को डेढ वर्ष भी पूरा नहीं हुआ कि उसका पति गणेश प्लेग की महामारी में आठ वर्ष की आयु में ही मर जाता है । पुराने संस्कारों को माननेवाले द्रौपदी के माता-पिता उसे बाल-विधवा के रूप में ही देखते है । वह उनके लिए कलमुँही, राँड तथा असगुनी बन जाती है । द्रौपदी का बचपन उससे छीन लिया जाता है । न वह आम बच्चों की तरह खेल सकती है, न आपने आप को सँवार सकती है । लेकिन बचपन में अकिंचन कीडे की तरह उपेक्षित द्रौपदी होश सम्हालने पर तितली की तरह चंचल और यौवन से रसीली बन जाती है । वह जवानों में कलह का, स्त्रियों मे ईर्ष्या का, प्रौढ में चिंता का और अपने माता-पिता के लिए भयंकर संकट का कारण बनती है । सबकी डाँट-फटकार, गाली-गलौच से तंग आकर द्रौपदी वैष्णवी बनकर गृह त्याग देती है । उसका वैष्णवी बनना भी समाज को अच्छा नहीं लगता । वे उसपर झूठे आरोप लगाकर उसका जीना दुश्वार कर देते है । हमारे समाज की गली-सडी पुरानी रूढियाँ, परंपराए किस प्रकार नारी को जीते जी मार देती है, इस का

बडा ही यथार्थ चित्रण इस कहानी में हुआ है। समाज की प्राचीन कालबाह्य परंपराओं को बदलने की आवश्यकता पर जोर देते हुए यह कहानी बाल-विवाह, विधवा-नारी की दयनीयता को चित्रित करती है।

विधवा की ओर देखने का समाज का दृष्टिकोन एकांगी तथा संदेहपूर्ण होता है। उसकी असहायताका लाभ उठाते हुए उसके चारित्र्य पर दाग लगाने की भी चेष्टा की जाती है। अगर यह विधवा जवान और सुंदर हो, जो उसके बारे में अनेक अफवाएँ चलती रहती है। ` दर्पण ` कहानी की चित्रा अपने पति की मृत्यु के उपरांत भी दर्पण के सामने घंटों तक खडी रहकर श्रृंगार करती रहती है। यह देखकर पास पडोस के लोग उसके चरित्र पर शक करते है। ` मै यह तो नहीं कहती कि वह गली-गली लोगों को रिझाती फिरती है। अकेले छिपकर जो वह घण्टो आइने के सामने झूमा करती है, उसे लुकाने छिपाने की क्या जरूरत ? कोई रोकता है ? `[१] लेकिन चित्रा के श्रृंगार के रहस्योद्‌घाटन से लेखक ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि विधवा स्त्री स्मृतियों के आवलंबन पर ही जिंदा रहती है। वह आलंबन ही यदि छूट जाय तो वह कैसे जिंदा रहेगी ? लेकिन समाज उसकी भावनाओं को समझ नहीं सकता और विधवा के चरित्र पर कीचड उछालने में आनंद लेता है।

<u>नारी और सती प्रथा</u> :

आधुनिक काल में सती प्रथा का विरोध हुआ। उसकी बुराईयों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया गया। समाज सुधारकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप सरकारने भी कानूनी तौर पर उस पर प्रतिबंध लगाये। यशपालने ` पहाड का पूल ` कहानी में प्राचीन काल से चली आ रही इस सती प्रथा का बडा ही हृदय द्रावक चित्रण किया है। गुजरी के बुर्ज की कथा से लेखक के मन में अनेक प्रश्न निर्माण होते है। वह इन सब प्रश्नों का उत्तर पाना चाहता है।

'दृष्टि सतियों के टियालों की ओर गयी और आग में जलती रानियों की पीड़ा का ध्यान आया और सोचा - क्या उस पीड़ा के कारण वह चीख न उठती होगी ? क्या वह छटपटती न होंगी ? क्या बासठ, बयासी और एक सौ सभी रानियाँ राजा के प्रेम में मर जाना ही चाहती थी ? क्या सब की यही इच्छा थी ? पैतालीस-पचास बरस से लेकर, सोलह-अठारह बरस की, महल में केवल बरस भर पहले आयी रानी तक ?'[१०] यह तो आम रानियों की स्थिति रही होगी। आखिर यह रानियाँ पहले स्त्रियाँ है और बाद में कुछ। इसी कारण यशपालने उनकी मानसिक अवस्था को चित्रित करते हुए कहा है, 'हाय मेरे पेट से जनमा बेटा मेरा काल हो रहा है। हाय मैने तो बीस बरस से उस के पिता को देखा नहीं। हाय जिन सौतों के महलों में वह रहता था, उन्हे ले आओ। मै तो कभी की राँड हो चुकी थी।'[११] ये उद्गार सती प्रथा की भीषणता का उद्घाटन करते है।

<u>नारी और मातृत्व</u> :

स्त्रीत्व की चरम परिणति मातृत्व में मानी जाती है। स्त्री के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास माता के रूप में ही होता है। इसी कारण विवाह का एक महत्वपूर्ण प्रयोजन संतानोत्पादन और वंश रक्षा है। वस्तुत: वैवाहिक जीवन की पूर्णता संतान से होती है। इसके बिना दंपत्ति जीवन में एक सूनापन का अनुभव करते है। फिर खासकर नारी के लिए तो संतान की महत्ता और भी बढ़ जाती है, क्योंकि प्रकृति ने उसे संतान को जन्म देने और उसका पालन पोषण करने के लिए ही चुना है। वह एक नये मनुष्य की सृष्टि कर रही है। आदि बाते उसके मन में शक्ति और साहस पैदा करती है। लेकिन यह मातृत्व प्रत्येक स्त्री के नशीब में होता ही है ऐसी बात नहीं है। इसके बहुतसे कारण हो सकते है। पति-पत्नी में शारीरिक दोष, अविवाहित कुमारी, प्रौढा, कुरूपता आदि।

यशपाल ने अपनी कहानियों में नारी की इस मातृत्व भावना को विविध पहलुओं से चित्रित किया है ।

विवाह के बाद प्रत्येक स्त्री माता बनना चाहती है । 'न कहने की बात' कहानी की जीजी भी संतान चाहती है । पर पति की कमी के कारण वह मा नहीं बन सकती । अत: अपने भाभी के मुन्ने को ही अपना समझ कर प्यार करती है । परंतु उसका मन इस बात को मानने के लिए तैय्यार नहीं होता । मुन्ने के प्रति अपना प्यार उसे कृत्रिम लगता है । इसी कारण कभी कभी आवेश में आकर वह कह उठती है, 'मुझे कहते है, क्या भाई के बच्चे अपने बच्चे नहीं ? अरे दूसरे का बच्चा अपनी कोख का बच्चा हो सकता है ? उससे क्या मेरी कोख फल जायेगी ?'[१२] इस प्रकार के विचार अंत में विचार ही रह जाते है । इसका कोई परिणाम नहीं होता । पर एक बात महत्वपूर्ण है और वह यह कि यशपाल की नायिका अपने भाग्य को नहीं कोसती ।

विवाहित स्त्री के मन में मातृत्व की भावना जागृत होना स्वाभाविक है । पर यशपाल ने अविवाहित प्रौढ नारियों के मन में भी मातृत्व भावना को चित्रित कर उनकी मानसिक अवस्था का विश्लेषण किया है ।

'अगर हो जाता' कहानी में सविता के रूप में नारी की अतृप्त इच्छा की कामना का चित्रण किया है । इंजीनियर नाथ चित्रपट देखने जाते है । वहां वे मिस सविता को देखते है । उसका सौंदर्य उन्हें बेचैन करता है । उसकी अप्राप्ति की स्मृति में नाथ 'अगर हो जाता' शीर्षक से कहानी लिखते है । संयोगवश मिस सविता वही कहानी मासिक पत्रिका में पढती है । कहानी में अपना ही वर्णन पढकर वह मन ही मन खुश होती है और अनुभव करती है कि नाथ उसका हो गया है । 'वह उठी और लैम्प स्टूल पर रख एक बार फिर उस कहानी को पढने लगी । ..... बाहों में दबा ली जाने की बात ।

उस का रोम रोम सिहर उठा । उसकी उंगली पकड कर सुंदर शिशु चलने की बात ..... उसकी छाती गर्व से उभर आयी ।`[१३]

शारीरिक कुरूपता के कारण बहुतसी स्त्रियों के विवाह नहीं हो पाते। परिणामत: उनकी मातृत्व की भावना अतृप्त ही रहती है। ऐसी ही एक नारी की मनोव्यथा को ` जिम्मेदारी ` कहानी में यशपाल ने चित्रित किया है। प्रभा ने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की है। वह अपने पैरों पर खड़ा रहना चाहती है। लेकिन उसके चेहरे पर चेचक के दाग होने के कारण वह अपने वैवाहिक स्वप्न को पूरा नहीं कर सकती। अत: वह झूठी कल्पनाओं को छोड़कर व्यावहारिक जीवन अपनाना चाहती है। परिणामत: वह बेकाई सेक्रेटरी बनने के लिए शिलांग चली जाती है। पाश्चात्य लिबासों एवं प्रसाधनों की लीपा-पोती करके वह बोस नामक सैनिक अधिकारी को अपनी ओर आकर्षित करती है। पर जब उसे यह मालूम होता है कि बोस विवाहित है, उसके सारे स्वप्न टूट जाते है और उसकी मातृत्व की इच्छा अधूरी रह जाती है।

इसी प्रकार ` निर्वासिता ` कहानी में प्रौढा और कुरूप इन्दु की अतृप्त मातृत्व भावना को स्वप्न के द्वारा चित्रित किया है। ` मस्तिष्क में उठे बवण्डर के बीच से दिखाई देने लगता ..... दूर सड़क पर उंचे वृक्षों की छाया में एक आया सफेद लहंगा - ओढनी पहने, एक बच्चा गाडी को धकेलती चला आ रही है ..... आया गाडी को होटल में उसके कमरे की ओर..... बंबई में उसके फ्लैट की ओर.....इलाहाबाद में उसके बंगले में लान में से होती, उसी की ओर ला रही है। गाडी में एक सुंदर नन्हा-सा बालक....अत्यंत सुंदर.....जैसे इन्दु स्वयम् दर्पण में अपना ही मुख देख रही हो.....वह इतना प्यारा है कि इन्दुके हृदय तंतुओं से बंधा है। उसे देख स्नेह के उद्वेग से इन्दु के स्तनों में गुदगुदी होने लगती है, जैसे वे बोझिल हो जाते है। वह लपककर उसे गोद में ले लेती है.... ।`[१४]

मातृत्व की स्वाभाविक इच्छा जब पूरी नहीं हो पाती तब उसकी पूर्ति के लिए नारी सामाजिक दृष्टि से अनैतिक मार्ग को अपनाने का साहस कर सकती । `निर्वासिता` कहानी की इन्दु पढ़ी-लिखी विदुषी होते हुए भी कुरूप होने के कारण उसकी शादी नहीं हो पाती । सब सामाजिक मान-सम्मान पाने के बाद भी वह अपने आप को अकेली, निर्वासित महसूस करती है । उसके मन में मातृत्व की भावना जोर पकड़ने लगती है । अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए वह सम्भ्रांत पुरूष के पास चली जाती है । `मैं एक संतान चाहती हूँ । अपने आप को समाप्त होने से बचाने के लिए..... अपना क्रम जारी रखने के लिए.....।`[85] लेकिन सामाजिक नैतिकता उसकी इस इच्छा को पूरा नहीं होने देती और इन्दु वहाँ से निराश होकर लौटती है ।

नारी और वेश्या :

हर एक सुसंस्कृत समाज के लिए यह शर्म की बात है कि वह अपने एक महत्वपूर्ण अंग, नारी जाति को घृणित पेशा करने के लिए बाध्य करे । वस्तुत: किसी कारण एक बार पतित,पथभ्रष्ट हो जानेवाली नारी के साथ समाज का व्यवहार, नारी के प्रति उसके दृष्टिकोन का परिचायक है । इस दृष्टि से हिंदु समाज निर्मम और कठोर रहा है । पुरूष नैतिक दृष्टि से कितना ही पतित क्यों न हो, किंतु वह समाज और परिवार का सदस्य बना रहता है । इसके विपरीत नारी के अज्ञान में, विवशता के कारण और पुरूष के माध्यम से होनेवाले तथा कथित पतन पर उसे पुरूष प्रधान समाज बहिष्कृत कर देता है । इतना ही नहीं उसके अपने परिवार के सदस्य भी उसे कुल-कलंकिनी आदि मान कर उसका मुँह भी नहीं देखते । ऐसी हालत में नारी के सामने दो ही रास्ते खुले रहते है - या तो वह अपने जीवन का अपने हाथों अंतर कर ले या जीवन की रक्षा के लिए अपनी जवानी का खुले आम व्यापार करे ।

गृहिणी और माता के पद की अधिकारिणी नारी को परिस्थिति निरपेक्ष नैतिक मानदण्ड के सहारे ` पतिता ` घोषित कर, जिस प्रकार पुरुषों की वासना तृप्ति के लिए बाध्य किया जाता है, वह समाज की अमानुषिक क्रूरता का प्रमाण है।

कोई भी नारी अपनी इच्छा से वेश्या नहीं बनती, उसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि अनेक कारण हो सकते है। यशपाल मार्क्सवादी होने के कारण उन्होंने आर्थिक कारणों को प्रधानता दी है। वैसे देखा जाय तो स्त्री आर्थिक दृष्टिसे परावलंबी होने के कारण वह मजबूरन वेश्या वृत्ति की ओर चली जाती है। ` उपदेश ` कहानी में भूपेन्द्र दर्शनशास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने के उद्देश्य से ईंग्लैड युनिवर्सिटी में दाखलि हो जाता है। ईंग्लैड जाने से पूर्व उसने वहाँ की सभी जानकारी प्राप्त कर ली थी। सबसे अधिक सावधानी का उपदेश और नसीहत उसने चरित्र की रक्षा के लिए पायी थी। इसके कारण वहाँ जाने के बाद वह प्रत्येक लड़की की ओर संदेह भरी निगाहों से देखने लगता है। ऐसे में ही उसकी मुलाकात एक ऐसी लडकी से होती है, जिसे वह खानदानी समझता है। लेकिन वह स्ट्रीट गर्ल ही होती है। उसे फटकारते हुए भूपेंद्र कहता है, ` मैने तो तुम्हें बहुत भली और सुसंस्कृत लडकी समझ कर विश (गुड ईवनिंग) किया था। मुझे आशा न थी कि तुम ऐसा घृणित काम करती होगी। `

लड़की ने भूपेंद्र की बांह में पड़ी अपनी बांह सहसा खींच ली। उसकी गर्दन तन गयी और रुक कर फुंकार उठी, ` चुप रहोजी....मै क्या घृणित काम करती हूं.....जो करती हूं, तुम्हारे जैसों के साथ करती हूं। बट आय डू इट नीड एण्ड यू डू इट फार फन (मेरी वह मजबूरी है और तुम्हारे लिए तफरीह)। `[१६]

पुरुषों का नारी की ओर देखने का जो दृष्टिकोन है उसके जबाब में उस लड़की का दिया हुआ उत्तर बहुत ही मार्मिक तथा यथार्थ है। यह कहानी पुरुषों की वृत्ति पर प्रकाश डालने के साथ-साथ वेश्याओं की पीड़ा को स्वर देती है। सेक्स की आवश्यकता पुरुष के लिए मनोरंजन का साधन है, तो नारी के लिए उसकी मजबूरी है। आर्थिक परिस्थिति नारी को वेश्या बनने के लिए विवश करती है, और इसके लिए जिम्मेदार है पुरुष।

`आदमी और पैसा` कहानी की झारना पैसे के अभाव में मजबूर होकर वेश्या बनती है। अपनी बात को स्पष्ट शब्दों में कहती है, `पेट भरना है तो टका चाहिए। टके के लिए करती हूँ, नहीं तो तुम टका क्यों दो ?`[१७] राम जब उसे पूछता है कि क्या यह काम तुम्हे अच्छा लगता है। तो मानो वह अपना ही नहीं सब वेश्याओं का हृदय खोलकर सामने रखती है, `बाबू, क्या सब लोग संतुष्ट ही है ? मनचाहा ही काम करते है ? पेट बहुत कुछ कराता है बाबू, जैसे और सौ काम यह भी एक काम है। पालनेवाला कोई एक न हुआ, दस बीस के ही सहारे जिंदगी काट रही हूँ। दस बुरा कहते है तो दस को अच्छी लगती हूँ। चोर बाजार करनेवाले को सब गाली देते है, तो क्या कोई अपना धंदा छोड देता है। मै कौन अनोखी बात कहती हूँ बाबू। अच्छा बाबू, अपने अपने घरों में दूसरी सब औरते क्या करती है ?... बाबू आदमी साथ नहीं सोता, उसका पैसा साथ सोता है।`[१८]

`दुखी-दुखी` कहानी आर्थिक विपन्नता से व्यस्त दु:खी वेश्या की कथा है। विपन्नता एवं व्याकुलता के आगे आदर्श एवं नैतिकता का कोई महत्व नहीं होता। भद्र समाज में किसी से कुछ लेना पाप माना जाता है। पर लेखक इसे तृप्त और संतुष्ट पेट का तत्वज्ञान मानता है। क्योंकि पापी पेट मनुष्य को सब कुछ करने के लिए मजबूर करता है। कहानी की युवती भी तीन दिन से भूखी है। उसका पति उसे छोडकर दूसरी स्त्री के साथ चला गया

है । ऐसी परिस्थिति में पापी पेट की आग बुझाने के लिए वह वेश्या बनती है । यशपाल के विचारों में मजबूर होकर भीख मांगना और पेट पालने के लिए शरीर बेचना दोनों भी समाज की विषमता का ही परिणाम है । अगर मनुष्य लगातार चार दिन भूखा रहे तो उसका व्यक्तित्व और विवेक शेष रह नहीं सकता । नारी की इस दयनीय स्थिति के लिए समाज की आर्थिक विषमता ही जिम्मेदार है ।

` पराया सुख ` कहानी में आर्थिक अभाव से ग्रस्त परवश बनी नारी की कहानी चित्रित है । मनुष्य गरीब होकर स्वतंत्र होता है, हाँ ना का निर्णय वह ले सकता है । पर आर्थिक गुलाम बनकर वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व को खो बैठता है । उर्मिला के चरित्र के द्वारा लेखक ने इसी बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है । उर्मिला एक स्कूल में अध्यापिका है । सेठी नामक एक अमीर आदमी के कृपाछत्र में आने के कारण उर्मिला संभ्रान्त महिला बन जाती है । उर्मिला विवाहित होने के कारण, सेठी के आकर्षण से बचना चाहती है । परंतु कालांतर में वह सेठी के प्रभाव को अस्वीकृत नहीं कर सकती । क्योंकि वह सेठी के उपकारों के बोझ के नीचे दब गयी है । आर्थिक परवशता के कारण स्त्री को अपनी इच्छाओं को कुर्बान करना पडता है । ` एक एक करके सेठी के व्यवहार उसकी आँखों के सामने आने लगे । सेठी को उसका अपने बालों में उंगलियाँ चलाना बहुत अच्छा लगता है । बिना कुछ कहे वह उसे सामने बिठा रखना चाहता है । सेठी जो कपडा लाकर दे, वो उसे सेठी के सामने पहनना ही चाहिए । सेठी की किसी बात को अस्वीकार कर देना उसके लिए संभव नहीं । जब सेठी चाहे उसे बिना बाँह और बिना पीठ का ब्लाऊज पहनना होगा । बेशक उर्मिला को भी वही कुछ पहनने, उसी तरह रहने से संतोष होता है, जैसे सेठी की इच्छा होती है । परंतु उसका अपना अस्तित्व, अपना व्यक्तित्व कहाँ रह गया ? `[१९]

`कोकला डकैत` कहानी में भी यशपाल ने अर्थाभाव को ही नारी के पतन का एकमात्र कारण माना है। कोकला एक पहाडी औरत है। उसका पति बीमारी के कारण कुछ काम नहीं करता। वह बेकार ही है। ऐसी स्थिति में कोकला के सामने बच्चों के परवरिश की जिम्मेदारी है। घास बेच-बेचकर वह कुछ कमाती तो जरूर है, पर इससे गुजारा तो नहीं चलता। तब वह सडक से चलनेवालों पर हँसिया चलाने का डर दिखाकर चवन्नी-अठन्नी ले लेती है। डकैती के अपराध में पुलिस उसे गिरफ्तार करती है। इस कथा के द्वारा यशपाल ने कुछ प्रश्न हमारे सामने उपस्थित किये है, जिनका उत्तर हम दे नहीं सकते। लेखक के विचारों में `कोकला का हँसिये के जोर से सडक पर अठन्नियाँ छीनना वास्तव में डकैती थी परंतु अठन्नी के जोर से बीसियों बार कोकला से जो छीना गया, वह कानून की नजर में क्या था ?`[२०] समाज में न्याय की जो असमानता है उसपर कठोर व्यंग्य करना ही लेखक का उद्देश्य है। साथ ही नारी की असहायता का भी वर्णन किया गया है।

`रिजक` कहानी पुरूष की अकर्मण्य प्रवृत्ति के कारण नारी को वेश्या बनाने की गाथा है। केवल की माँ चंपा ऐसी ही एक नारी है जिसका पति पिछले कई सालों से बेकार है। गोद में तीन बच्चे है। इन सब का पेट पालने की समस्या चंपा के सामने है। परिस्थिति से निराश होकर वह अपना शरीर बेचती है। इसी कारण मुहल्लेवाले उसे वेश्या कहकर गली से निकाल देते है। बेचारी यही सोचती हुयी दिन बिताती है, `कोई किसी का रिजक थोडे ही छिन लेगा। भगवान सब के जुल्म देखते है।..... उनकी धरती पर सब को जगह है। आदमी का बस चले तो कोई किसी को जीने थोडेही दे।`[२१] प्रस्तुत कथा में लेखक ने रिजक या रोजी, जीविका के रूप में नारी को शरीर बेचने के लिए बाध्य करनेवाली समाज व्यवस्था के प्रति तीव्र विरोध प्रकट कर पुरूष की अकर्मण्य प्रवृत्तिपर प्रहार किया है।

इस प्रकार की और एक कहानी है ` आबरू ` । जिसमें नारी खुले आम वेश्या बनकर कोठे पर तो नहीं बैठती, पर जो बंबई में अपनी आबरू बचाकर भी अपना शरीर बेचने को तैयार रहती है । समाज में पुरूष की शिकार बन निरंतर तड़पनेवाली औरत जब असहाय बनती है तो वेश्या बनने के सिवाय उसके सामने और कोई चारा नहीं रहता । अपनी असहाय परिस्थिति को स्पष्ट करते हुए वह स्त्री कहती है, ` हमारे पति घर से लड़कर हमे साथ लेकर नौकरी ढूँढने आये थे । यहाँ अपनी बहिन के यहाँ ठहरे थे । वे लोग पाँच बरस से यहाँ है । हमारे घरवाले तीन महिने चक्कर लगा कर लौट गये । किराया काफी नहीं था इसलिए वे अकेले गये कि किराया भेज कर, हमे बुला लेंगे । तब से तीन साल होने को आ रहे है । हमारे नंदोई पांच बरस से रोजगार ढूँढ रहे है । सिनेमा में न जाने क्या करते है । दो-तीन महिने में कभी रात-बिरात आ जाते है । मकान का किराया भर वे दे जाते है । साफ कह देते है कि और अधिक उनके बसका नहीं है । बरस के बरस ननद को एक बच्चा जरूर दे जाते है । इससे अधिक जिम्मेदारी उनकी नहीं है । ये लड़की है, ननद के चार बच्चे है । हम लोग क्या करे ? इस बदन के सिवाय हम लोगों के पास है क्या...? `[२२] नायिका की कथा सुनकर कथा नायक मन ही मन सोचने लगता है, ` सोचा जब उससे कह दूं कि जब गुजारे के लिए तुम्हारे पास कोई साधन नहीं है तो सामने डूब मरने के लिए इतना बड़ा समंदर तो है । ` पर वह कह न सका, क्योंकि सोचने लगा, ` अगर यह डूब ही मरेगी तो आबरू किसकी बचायेगी । `[२३] जीते जी आबरू बचाने की व्यवस्था समाज के पास नहीं है । इस प्रकार पूंजीवादी समाज के कलंक रूप इस वेश्या-वर्ग पर अपने विचार यशपाल ने बड़ी सहानुभूति पूर्वक व्यक्त किये है ।

वेश्या का एक रूप यदि ` दुखी-दुखी ` है तो दूसरा रूप ` हलाल का टुकड़ा ` है । यह एक ऐसी वेश्या की कहानी है जो हलाल के टुकड़ों पर

जीती है, हराम के नहीं। फुलिया एक वेश्या होते हुए भी विवेक, ईमानदारी और धर्म को मानती है। दो रुपयों पर अपना शरीर बेचनेवाली और ग्राहक से तय किये दो रुपये न मिलने पर चिल्ला-चिल्ला कर धरती और आसमान एक करनेवाली यह औरत कांग्रेस नेता रावत के दो हजार रुपये ईमानदारी के साथ वापस करती है। क्योंकि वह वेश्या शौक के कारण नहीं बनी है, विवशता से बनी है। क्योंकि समाज ने उसे उठने का अवसर न दिया, उसे हेय समझा। उसे जीवीकोपार्जन और स्वावलंबन का अवसर न दिया। इसी कारण बीस रुपये की बखशीशी हराम का पैसा कहकर ठुकरा देती है। `वाह रे हम कोई पीर-फकीर है क्या ? जो हाथ फैलाकर खैरात लैंगे ? हमारी मेहनत का जो कुछ अल्ला देगा, किसी की खिजमत करेंगे तो हलाल के टुकडे पर हमारा हक होगा, ऐसे गये थोडे है कि भीख ले... ?`[२४]

वेश्या व्यवसाय पर छल, कपट आदि आरोप लगाया जाता है। पर फुलिया इन सब से अलग है। इसकी चर्चा करते हुए लेखक कहता हैं, `फुलिया के बेरोनक चेहरे कि ओर देख कर वे सोचने लगे, जवानी को टके-टके बेचनेवाली, अपने शरीर का सौदा करनेवाली यह औरत, बासी गोश्त-पूरी को देख अपने को न संभाल सकनेवाली यह औरत, दो हजार को कैसे ठुकराये दे रही है.... इसके भी धर्म है, ईमान है, इज्जत है ? फुलिया के चेहरे पर उन्हें एक ज्योति दिखाई देने लगी जैसे कोई परम त्यागी, सत्वंता की देवी उनके सामने बैठी हो।`[२५] फुलिया के इस सद्गुणों ने उसके वेश्या कलंक को पूर्ण रूप से धो डाला है।

गंडेरी प्रतीक है नारी का। मुजरा करनेवाली नारी जो बूढी, क्षीण काय है, चूसी गंडेरी की तरह। गंडेरी में जब तक रस रहता है,लोग उसे चुसते रहते है और रस खत्म होने पर उसे थूक देते है। समाज द्वारा बनायी

गयी नारी की इस स्थिति को यशपाल ने मुजराकर जीवन यापन करनेवाली बाईजी के चरित्र के द्वारा उद्घाटित किया है । ' गंडेरी ' इस कहानी में एक ओर मध्यवर्ग की बाबूगिरी का रूप जगमोहन प्रस्तुत करता है तो दूसरी ओर ढली उम्रकी बाईजी है, जिनके सूखे शरीर को देख दर्शकों में स्फूर्ति के स्पंदन की जगह विकर्षण और घृणा होती है । उनकी आँखों में न मद है न मस्ती, बल्कि है निराशा और कातरता । मानो वे दोनों हाथ फैलाकर कह रही है, ' मै तुम्हें रिझा रही हूं, तुम रिझते क्यों नहीं ! तुम्हारा मनोरंजन हो, तुम्हारा दिल बहले तो एक टुकडा हमें भी मिले । देखो, मै सब कुछ करने को तैयार हूं, तुम खुश हो जाओ, मै तो तुम्हारा मन बहलाने को जान लडाये दे रही हूं, तुम खुश नहीं होते । '[२६] बाईजी भी गंडेरी है, परंतु दांतों में दबाकर चूसी जा चुकी है । सूखी गंडेरी का क्या दाम । यह है उस नारी की विवशता जिसे हम धूर्त और मक्कार समझते हैं, अपदस्थ, नीच, हेय, कुत्सित, ईमान-रहित, ला-मजहब, बेइज्जत, कुछ चांदी के टुकडों के लिए शरीर का सौदा करनेवाली । यशपाल ने इस कहानी के द्वारा नारी का मोल करनेवाली समाज व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है । जगमोहन के शब्दों में, ' नरगिस है गुलाबवाली गंडेरी, जिसके दर्शन से ही शीतलता और स्फूर्ति मिलती है । बाईजी भी गंडेरी है परंतु दांतों में दबाकर चूसी जा चुकी है । अब उनमें रस कहाँ ? अब उसका क्या दाम ?'[२७]

' भाग्यचक्र ' कहानी में नारी को भ्रष्ट करनेवाली समाज व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है । यह कहानी अमला और नन्दसिंह के प्रेम से शुरू होती है । अमला बंगाली है तो नन्दसिंह पंजाबी । भाषा, प्रांत, जाति जैसे कृत्रिम बंधनों को तोडकर दोनों एक दुसरे से प्रेम करते है । अपने प्रेम को सफल बनाने के लिए दोनों घर से भाग जाते है । पर भाग्य का चक्र कुछ ऐसी चाल चलता है कि दोनों एक दुसरे से अलग हो जाते है । इसके बाद अमला की शादी दुसरी ओर की जाती है । पर पति के घर में भी वह जादा दिन

टिक नहीं सकती । आत्महत्या करने के अपराध में उसे जेल भेज दिया जाता है । जेल में उसकी मुलाकात नसीम से होती है । वह उसे जीवन का अर्थ समझाते हुए कहती है, ` अरे औरत की जवानी है तो उसके हाथ टकसाल है । तेरी फिक्र करनेवाली दुनिया है ?`[२८] भोली अमला का वेश्या बनना दिखाकर यशपाल ने नारी के दुर्भाग्य की ओर संकेत किया है । अमला का आत्महत्या का प्रयास नारी पर होने वाले अत्याचारों की ओर संकेत करता है ।

नारी और यौन-समस्या :

भारत तथा पश्चिम की सभ्यता में मौलिक भेद है । भारत की सभ्यता अध्यात्म प्रधान रही है, जब कि पाश्चात्य सभ्यता भौतिक प्रधान है । भौतिकवाद के सिध्दांत त्याग पर बल देने वाले भारतीय आदर्शों के प्रतिकूल है । ऐसे ही समय अंग्रेजी शासन की स्थापना के परिणाम स्वरूप भारत में पाश्चात्य सभ्यता अपनी अच्छाईयों और बुराईयों के साथ आयी । अपनी भौतिकवादी श्रेष्ठता से पाश्चात्य सभ्यता ने भारत को अभिभूत कर दिया । औद्योगिक उन्नति के कारण पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियाँ भी घर से बाहर निकलकर जीवन के हर क्षेत्र में प्रविष्ट हुयी । शिक्षा के प्रचार के कारण स्त्रियों को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का अहसास हुआ । परिणामत: युगों से पीडित और दलित नारी ने पुरुष के विरूध्द विद्रोह किया और वह पुरुष के प्रतिद्वन्दी के रूप में सामने आयी ।

यद्यपि प्राचीन वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक भारत में नारी को देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता था, पर प्रत्यक्ष व्यवहार में उसकी स्थिति एक गुलाम जैसी थी । वह भी एक इन्सान है, उसे मन, भावना, इच्छा या अभिलाषा हो सकती है, इसका विचार भी पुरुष प्रधान समाज ने कभी करने की जरूरत नहीं समझी । परिणामत: बीसवी शताब्दि में

भारतीय नारी ने विद्रोह किया। अपने सामाजिक, पारिवारिक स्थान को निर्धारित करने के साथ-साथ उसने अपनी मानसिक तथा शारीरिक पीडा को भी अभिव्यक्ति दी। यशपाल पर मार्क्स के साथ-साथ फ्रायड के विचारों का भी प्रभाव देखा जा सकता है। फ्रायड ने नारी की अनेक समस्याओं के मूल में उसकी यौन समस्या को प्रधानता दी। अत: यशपाल ने भी अपनी कहानियों के द्वारा नारी की यौन समस्याओं को चित्रित किया है।

` प्रायश्चित ` कहानी में यशपाल ने नारी की शारीरिक और मानसिक दुर्बलताओं को स्पष्ट किया है। काम-वासना, विवाह की इच्छा मनुष्य की सहज स्वाभाविक नैसर्गिक प्रवृत्ति है। उसका दमन करना या करने के लिए दबाव डालना नारी की आत्मा पर जघन्य अन्याय करना है। एक ब्रह्मचारिणी गुरुकुल की स्नातिका पिता की इच्छा को आदर्श मानकर सात वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करती है। पर विलासिता की नगरी अमृतसर आने पर वहाँ के वातावरण से प्रभावित होकर श्रृंगार में रत होती है। उसके मन में विवाह करने की इच्छा निर्माण होती है। ऐसी स्थिति में अपनी पाली-पोसी लडकी को देखकर पिताजी के मन में घृणा की भावना निर्माण होती है। यह देखकर वह युवती आत्मघात करना चाहती है। यशपाल के विचारों में गुरुकुल, ब्रह्मचर्य आदि बातें कृत्रिम और अनावश्यक है, तथा इन भावनाओं का दमन अप्राकृतिक है।

` शिकायत ` कहानी में नारी की मानसिक दशा का विस्तृत और सूक्ष्म वर्णन है। निर्मला शहर से दूर पहाड जैसे निर्जन प्रदेश में विश्राम के लिए चली जाती है। वहाँ का एकांत पहले तो उसे सुहाना लगा, लेकिन शहर के चहल-पहल की आदि होने के कारण धीरे-धीरे वहाँ वह उब जाती है। पहाड के निर्जन जीवन से वह शहरी जीवन की तुलना करने लगती है। ` वह सैर के

लिए गयी परंतु पैर उठते न थे। उन्हें घसीटना पड रहा था। एक अनुत्साह-सा उसे निढाल किये दे रहा था। ठीक वैसे ही जैसे पहियों से हवा निकल जाने पर मोटर चल नहीं पाती। चारो ओर फैली हुयी चाय की झाडियाँ, ऊँचे दवदारों और पहाडी ढलवानों पर दूर-दूर तक फैले हुए फुलों की उपेक्षा भरी उदासीनता, एक अदृश्य दलदल की तरह उसकी गति रोक रही थी मानो वायु की लहरों पर चलनेवाला शब्द शून्य में पहुंचकर आगे चलने में असमर्थ हो रहा था। इसके मुकाबिले में अनारकली बाजार की वह भीड, जहां संध्या समय राह चलतों के वस्त्र का स्पर्श हुए बिना एक कदम चलना भी संभव नहीं, लाहौर की दूसरी सडकों का अनुभव वहां कदम-कदम पर उत्सुक और कौतूहलपूर्ण तीव्र दृष्टि, वस्त्रों को भेदकर शरीर की त्वचा को रोमांचित करती है, वहां कदमों में कितनी स्फूर्ति अनुभव होती है मानो पैरों में स्प्रिंग लगे हो। एक विद्युत से व्याप्त वातावरण, जो सभी ओर से आकर्षित कर शरीर को गतिमान कर देता है।'[29] निर्मला की शिकायत है कि यहां उसके सौंदर्य को चाहनेवाला कोई नहीं है। 'यहां वह किस पर विजय प्राप्त करे ? वह आग की लपट-सी सुंदर निर्मला यहां किसे जलाये ? और जब जलाने को कुछ नहीं है, तो क्या बुझा जाय ?'[30]

इसके विपरीत शहर में रहनेवाली उसकी अंतरंग सखी हेमा की शिकायत कुछ और ही है। वह खत में लिखती है, 'नगरों का जीवन कितना घृणित है। पुरूषों का व्यवहार कितना घृणापूर्ण होता है। बाजार में सडक पर जहां देखो, वे अपनी भूखी दृष्टि की चोंचे मार-मारकर लडकियों के शरीर से मांस नोच लेना चाहते है। .....जरा घर से बाहर निकलते ही शव पर मंडराते हुए चील कौवो की तरह बेशा नजरे घेर लेती है। कदम उठाना दूभर हो जाता है। .... मै सोचती हूं, कही कोई एकांत स्थान पृथ्वी के किसी कोने में मिल जाता तो स्वतंत्रताकी सांस ले सकती।'[31]

यशपाल ने इन दो चित्रों को परस्पर विपरीत स्थिति में चित्रित कर स्त्री-पुरूष के पारस्परिक आकर्षण को सहज प्रवृत्ति के रूप में चित्रित किया है। लेकिन साथ ही पुरूष का स्त्री की ओर देखने का जो वासनात्मक दृष्टिकोन है, उसकी ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित किया है। जिस शरीर के कारण पुरूष स्त्री की ओर आकर्षित होता है उस शरीर के प्रति स्त्री के मन में नफरत पैदा होती है। इसी कारण अपनी मनोव्यथा व्यक्त करते हुए वह कहती है, `इस शरीर का क्या किया जाय ? क्या जमीन में गड जाये तभी शांति मिलेगी ? ..... मकान से निकलते ही दो-नस्क पीछे लग जायेंगे और शिकारी कुत्तों की तरह पीछा किया करेंगे।`[३२]

` निर्वासिता ` कहानी के द्वारा इन्दु नामक सुशिक्षित प्रौढा की मनोव्यथा को चित्रित किया है। एम.ए., पीएच.डी. पढी इन्दु बंबई के कॉलेज में प्राध्यापिका है। वह युवती होते हुए भी कुरूप होने के कारण उसकी शादी नहीं हो पाती। इतनी उच्च शिक्षा-दीक्षा तथा मान सम्मान के बावजूद भी काम-वासना की स्वाभाविक अतृप्ति उसे पागल बना देती है। सम्मानित एवं आत्मनिर्भर होकर भी मानसिक असंतुलन के कारण निर्वासिता बनी रहती है। ` स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनकर भी जीवन निराश्रय हो रहा था। जीवन के क्रम का, कल्ले फूटने के सिलसिले का अवलंब पुरूष।.....पुरूष से पाये बिना वह कुछ पा नहीं सकती। जीवन का वह सिलसिला पुरूष से ही पाया जा सकता है जो नारी के मुर्झा कर गिर जाने पर भी उसके जीवन के क्रम को जारी रख सकेगा। पुरूष के बिना सहाय है। उसे अपना सिलसिला जारी रखना है।`[३३]

यशपाल ने इन्दु के चरित्र के जरिए नारी के यौन प्रश्न को उठाया है। यौन प्रश्न का जीता-जागता उदाहरण इन्दु है। इन्दु का आचरण दमित वासना से आक्रांत नारी का आचरण है जिसमें मानसिक संतुलन का अभाव है। शारीरिक इच्छाओं के दमन एवं अतृप्त रहने के परिणाम को लेखक ने स्वाभाविक रूप में चित्रित किया है।

`प्रतिष्ठा का बोझ` कहानी का केवलचंद किराये पर एक मकान में रहने लगता है। पडोस में ही रहनेवाली बहू (लक्ष्मी) के प्रति उसके मन में आकर्षण निर्माण होता है। दोनों भी एक दुसरे को चाहने लगते है। मौका पाकर दोनो एकांत में मिलते है, तभी लक्ष्मी की सास बीच में आजाती है। इसका वर्णन करते हुए लेखक कहता है, `उसने लक्ष्मी को बाँहो में इतने जोर से समेट लिया कि उसे अपने शरीर में ही समा लेगा। वह उसके होंठो को खा जाना चाहता था।.... सहसा जीने के किवाडों की साँकल खनखनाकर गिरने की आहट हुयी और साथ ही किवाड खुल गये। दरवाजा खुलने से जीने की बत्ती का प्रकाश भीतर फैल गया। सास ने भीतर कदम रखा और आँखे तथा मुँह फैलाये, हक्की-बक्की खडी रह गयी। साँसने जोर से चिल्लाने के लिए सीने मे साँस भरा.....केवल की बाँहों में सिमटी लक्ष्मी प्राय: बेसुध हो गयी थी। केवल ने उसे वैसे ही फर्श पर गिर जाने दिया। आत्मरक्षा के लिए वह सामने खडी, पुकारने के लिए तैयार सास पर टूट पडा। पुकारने के लिए खुले सास के मुँह से शब्द निकल पाने से पहले ही केवल ने सास के भरपूर शरीर को बाँहों में लेकर समीप पडे पलंग पर डाल कर उपर से दबा लिया।..... दस मिनिट बाद जब सास ने केवल के बाँहों से मुक्ति पायी तो केवल की गाल पर ठुनका देकर मुस्कार कर शिकायत की....` बडे वैसे हो तुम।`[३४] विधवा सास की दबी हुयी यौन भावनाओं को केवल के स्पर्श के कारण राहत मिलती है। इसी कारण वह अपना क्रोध भूल कर सिर्फ मुस्करा देती है।

`उर्मी की माँ` कहानी में यशपाल ने काम वासना के दमन के दुष्परिणाम की ओर संकेत किया है। उर्मी की माँ विधवा है। उसे दो बच्चे है। एक उर्मी आणि दुसरा बिशना इन दोनों की परवरिश करना, उन्हें अच्छी शिक्षा देना ही उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। इस दृष्टि से वह प्रयत्नशील भी है। उसका पुत्र बिशन इंजीनियरिंग कॉलेज में पढता है, उसकी ओर से माँ को कोई चिंता नहीं है। चिंता सिर्फ बेटी उर्मी की है जो शीतल के प्रकोप से कुरूप बन गयी है। `उर्मी के गोरे रंग पर शीतला के हल्के हल्के दाग ऐसे लगते थे मानो बरसी हुयी चाँदनी के बूंदों के चिह्न बन गये हो। गल्ली-मुहल्ले के ताक-झाँक करनेवाले लडके आपस में कहते, `यार यह तो दगे हुए पीतल की तरह और दमक गयी....।`[३५] संयोगवश घर में ही किरायेदार रहनेवाले शिवराम के साथ उर्मी का प्रेम चलता है। `शिवराम और उर्मी दूसरों की निगाहे बचा कर अपना खेल खेलते रहे। ज्यों ज्यों उर्मी को प्यार का रस आता गया, वह दिलेर होती गयी। जब भी मौका मिलता, एक चुंबन चुरा लेती या शिवराम के शरीर से रगडकर ही निकल जाती।... अब उसके यौवन का वेग स्वयं अपने बहाव के मार्ग को चौडा करता जा रहा था।`[३६] लेकिन उर्मी और शिवराम का यह प्रेम बिशन और माँ को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने दोनों को अलग कर दिया। पर उन्हे अलग करने से यौवन की बाढ तो रुक नहीं सकती थी। `उर्मी की आँखों में ऐसी प्यास और उसके यौवन के तूफान में कुछ ऐसा आकर्षण था कि नौजवानों क्या अधेडों के लिए भी उसकी उपेक्षा कठिन हो जाती थी। उसकी प्रकृति भी खालिस घी की सी हो गयी थी कि पुरुष के सामीप्य की उष्णता पाते ही उसे पिघलने से बचाया नहीं जा सकता था।`[३७]

मानसिक तथा शारीरिक भूख से दूर रहने के कारण उर्मी की अवस्था शोचनीय हो गयी। `कोठरी में बंद रहने से उसकी भूख कम हो गयी और चेहरे का नूर भी उड गया। खुर्मानी की सी ललाई लिए गोरा

रंग अब बरसात के दिनों में किसी टीन के चादर के नीचे उग कर लम्बी हो गयी घास-की तरह पीला-सफेद सा हो गया।'[38] इस परिस्थिति से छुटकारा पाने का एकमात्र इलाज था उचमी की शादी कर देना। हकीम संतसिंह ने यही कहा, 'दवाई बेकार है। लड़की जवान है। उसे कोई बीमारी नहीं है। ब्याह कर दो, अपने आप ही ठीक हो जायेगी।'[39] मेम डाक्टरने भी यही सलाह दी, 'यह तुम्हारी लड़की को शादी मांगता....उसको मर्द मांगता।'[40] लेकिन हर मुमकिन कोशिश के बावजूद भी उचमी की शादी नहीं हो पाती। उचमी इस दु:ख को भूलने के लिए माता ज्ञानमयी की संगती में चिंतन, मनन और प्राणायम आदि आध्यात्मिक कार्यों में उलझ जाती है। पर अंदर ही अंदर घुलते हुए एक दिन मर जाती है। नारी का कुरूप होना समाज की दृष्टि में कितना बड़ा दोष है, और इसके परिणाम स्वरूप एक सर्वसाधारण स्त्री को कितनी बड़ी मानसिक यातनाएं भुगतनी पड़ती है इसका बड़ा ही विदारक चित्रण यशपालने किया है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष में यौन भावना स्वाभाविक रूप में होती है, उसका दमन अस्वाभाविक एवं हानिकारक है। उसके परिणाम स्वरूप किसी की जान भी चली जा सकती है।

'ओ भैरवी' कथा बुध्द काल के परिपार्श्व में यौन समस्या को हमारे सामने रखती है। बौध्द धर्म में भिक्षु बनने के लिए नारी-विमुख होना आवश्यक माना जाता था। इस तथ्य को लेकर कहानी आगे चलती है। माहुल तक्षण कला में प्रवीण है। वह श्रीमानों की हवेली पर नारी के सौंदर्य चित्रों को बनाता है। पर बाद में इस सौंदर्य के प्रति घृणा उत्पन्न होने के कारण भिक्षु बनता है। उसकी कला से परिचित होने के बाद सिध्द जीमूत उसे भैरवी नामक सुंदरी का शिल्प बनाने की आज्ञा देते है। सौंदर्य और यौवन के स्वाभाविक आकर्षण के कारण माहुल और

भैरवी एक दूसरे की ओर खींच जाते है। इतना ही नहीं यहाँ से वे भाग जाते है। सिध्द जीमूत इसमें आरंभ से ही अधर्म मानता है। पर बाद में वे दोनों की क्रीडा से प्रभावित होते है। उनका तपोभंग होता है।

नारी वासना का मूल है, अत: त्याज्य है। धर्म के इस तत्व को यह कहानी झूठा सिध्द करती है। नगरसेठ वसुदत्त भैरवी को तांत्रिक सिध्द जीमूत की साधना के लिए एक उपकरण के रूप में भेट देता है। इस विहार में भैरवी बंदी है। तांत्रिक सिध्द जीमूत भैरवी को अपनी योग साधना का एक साधन मानते है। जिससे भैरवी के मन को अनेक यातनाओं को सहना पडता है। अपनी क्षुब्ध भावनाओं को स्पष्ट करते हुए वह कहती है, ` सिध्द मुझे अनेक घडी तक अपने सामने निरावरण खडी रहने का आदेश देकर इस प्रकार देखते रहते है कि मानो मै जड काठ का कुन्दा हूं। वे मेरी लज्जा का अपमान कर मुझे मिट्टी कर देते है। वे मेरे अंगों का स्पर्श और मर्दन कर मेरी अनुभूतियों का कोई प्रभाव अपने शरीर पर नहीं होने देते। वे स्वयं अनासक्त रहकर मुझे भोग का सामान बनाते है। इसे अनासक्त कर्म सिध्द करते है। कलाकार, बिना अर्थ और भाव के वासना की क्रिया को भोगना क्या यातना नहीं है ?`[४१]

` तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूं ` एक ऐसी नारी की व्यथा है जो कामेच्छा की पूर्ति के अभाव में जीवनभर कुंठाग्रस्त बनी रही है। कहानी यौन समस्या का उद्घाटन करती है। माया आगरे के एक समृध्द कायस्थ वकील की तीसरी पत्नी है। ` चौबीस पच्चीस वर्ष की आयु में भी उसकी गोद सूनी रहने पर भी वह कानून वकील साहब के पांच बच्चों की मां है। .....जब वकील साहब की आयु प्राय: छियालीस वर्ष की थी, उन्होंने गृहस्थी संभालने और अपना अकेलापन दूर करने के लिए क माया को पत्नी

के रूप में स्वीकार कर लिया था । `४२ लेकिन माया अपनी काम वासना की तृप्ति के अभाव में अंदर ही अंदर घुलती रहती है । ऐसी अवस्था में निगम उसके लिए आशा की किरण बनकर उपस्थित होता है । जीवन के चरम क्षण पर वह अपने आप को निगम को समर्पित करना चाहती है । इसका वर्णन करते हुए लेखक कहता है, ` माया अपनी कुर्ती को खोल देने के लिए खींच रही थी । काजो में फँसे बटन खिंचे जा रहे थे और उसके स्तन चोंच उठाये तीतरों की तरही कुर्ती को फाड देना चाहते थे । `४३ पर जैसे ही निगम माया के समर्पण को अस्वीकार कर देता है, वह अपने आपको सम्भाल नहीं पाती । ` माया का चेहरा तमतमा उठा । माया सन्न से निश्चल हो गयी । पिघली हुयी आँखे पथरा गयी और गर्दन क्रोध में तन गयी । श्वास और भी गहरा और तेज हो गया । आधा क्षण स्तब्ध रहकर क्रोध से निगम को घूर कर कड़े स्वर में फुंकार उठी, ` तो तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूं । `४४

विवाह दो मनों के साथ-साथ दो शरीरों का भी मिलन होता है । लेकिन अगर यह विवाह अनमेल हो तो यौन समस्या खड़ी होती है । ` औरत ` कहानी की रितिया एक युवा औरत है जिसकी शादी आर्थिक मजबूरी के कारण एक वृद्ध अपाहिज के साथ होती है । अपने बुढे पति से रितियाँ की कामेच्छा अपूर्ण रहती है, परिणामत: वह भोला नामक युवक की ओर आकर्षित होती है । अगर कोई शादी शुदा जवान स्त्री अपनी यौनेच्छा की पूर्ति के लिए किसी हम उम्र जवान पुरुष से संपर्क रखे तो क्या वह अनैतिक है ? यशपाल के विचारों में नैतिकता की सड़ी-गली धारणा कालातीत है । रितिया का लेखक द्वारा समर्थन प्रगतिशील धारणाओं की निर्मिती के लिए किया गया सहेतुक प्रयास है । यशपाल के विचारों में विवाह नारीको क्रीतदासी बनाने की रस्म नहीं है । पुरुष की तरह नारी का भी अपना अलग अस्तित्व होता है । स्त्रियों की स्वतंत्रता एवं समानता के अधिकार को उठाना कहानी का उद्देश्य है ।

इसी प्रश्न को लेकर यशपाल की ` पुरूष भगवान ` कहानी हमारे सामने आती है । एक जवान और सुंदर गोरखा युवती की शादी बूढे गोरखा से हो जाती है । दुर्भाग्य से वह जवान युवती अपने बूढे पति से पूर्णत: अतृप्त रहती है । अपनी स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह भोला नामक जवान नौकर से संबंध रखती है । यशपाल इन दोनों के संबंध में अनैतिकता नहीं देखते । क्योंकि वे दोनो अपनी इच्छा से अपनी स्वाभाविक, नैसर्गिक भावनाओं को प्रकट कर रहे है । लेखक कहता है, ` क्या सिर काट जाने के खतरे को वह लडकी नहीं जानती ? उस खतरे और जोखीम को जानकर, सिर हथेली पर रखकर वे दोनों जीवन की प्रेरणा से मिले । उनका यह स्वच्छंद मिलन कितना स्वाभाविक और पवित्र । `४५

स्त्री पर पुरूष, धर्म एवं समाज के अधिकार को लेखक दास के जीवन पर स्वामी का अधिकार मानते है । नैतिकता को स्थायी मूल्य के रूप में लेखक स्वीकारना नहीं चाहता । उनके विचारों में परिस्थिति के परिवर्तन के साथ स्त्री-पुरूष संबंधों की नैतिकधारणाओंमें परिवर्तन आवश्यक है । यदि किसी सोलह-सत्रह साल के जवान युवती की शादी सत्तर वर्ष के बूढे से हो, वह बूढे से यौन संबंधों का संतोष प्राप्त नहीं कर सकती हो और अपनी ■ इस सहजात वृत्ति के संतोष में वह किसी युवक से संबंध रखती हो तो लेखक के विचारों में इसमें किसी भी बात की अनैतिकता नहीं है । नारी के इस व्यवहार को वे स्वाभाविक और उचित सिध्द कर अपने प्रगतिशील होने का प्रमाण प्रस्तुत करते है । पुरूष को भगवान बनाने की व्यवस्था पर किया गया यह व्यंग्य बडा ही मार्मिक है ।

` जबरदस्ती ` कहानी में नारी की कुण्ठाओं का चित्रण किया है । यशपालने सुनंदा के द्वारा इसे प्रस्तुत कर मन की इच्छाओं को चित्रित किया है । नारी की इच्छा और सामाजिक बंधनों का संघर्ष दिखाकर सामाजिक

बंधनों के आगे नारी को परवश दिखाया है । नारी की मनोधारणा को स्पष्ट करते हुए लेखक कहता है, `मैं जबरदस्ती में विश्वास नहीं रखता और स्त्रियाँ पसंद करती है केवल जबरदस्ती । उनका अच्छा या बुरा सब काम जबरदस्ती से होता है । धर्म और पुण्य करती है जबरदस्ती करवाने पर । पाप करती है तो मजबूर होकर । `४६

` धर्मरक्षा ` कहानी में यौन समस्या को चित्रित किया है । प्रस्तुत कथा में यशपाल ने पिता का पुत्री से यौनाकर्षण दिखाकर काम-वासना के दमन के दुष्परिणामों की ओर संकेत किया है ।

<u>नारी की ओर देखने का पुरुष का दृष्टिकोन</u> :

नारी की ओर देखने का प्राचीन दृष्टिकोन आदर्शात्मक होते हुए भी व्यावहारिक दृष्टिकोन एकांगी तथा स्वार्थी था । परिणामत: भारतीय नारी वैदिक युग के सम्मानपूर्ण पद पर अधिक दिनों तक प्रतिष्ठित नहीं रह सकी । धीरे धीरे उसकी सम्मानजनक और समतामय स्थिति का ह्रास होने लगा और वह सहचरी के महान पद से दासी के निम्न स्तर को पहुंच गयी । इसके सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक कारण थे । पुरुष की दृष्टि में नारी एक उपभोग्य दासी के रूप में, मनोरंजन के साधन के रूप में आ गयी । पुरुष की शारीरिक शक्ति और स्वामित्व की भावना तथा नारी की शारीरिक निर्बलता, अत: संरक्षण की आवश्यकता, उसकी आर्थिक पराधीनता और प्रेम में समर्पण भावना ने इस में योग दिया । ईसा की तीसरी शती से हिंदू-नारी के लिए पराधीनता, निंदा, अशिक्षा, पर्दा, बालविवाह, विधवा-विवाह निषेध, सती-प्रथा, सतीत्व आदि के एकांगी आदर्श और नैतिकता के दोहरे मानदण्ड द्वारा जो चतुर्दिक घेरा डाला गया, वह विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक परिस्थितियों के कारण उत्तरोत्तर जटिल होता गया ।

यशपाल ने अपनी विविध कहानियों के द्वारा नारी पर होनेवाले पुरूष के अत्याचार, नारी की पराधीनता तथा पुरूष का नारी की ओर देखने का दृष्टिकोन स्पष्ट किया है ।

आज का पुरूष स्त्री को उपभोग का एक साधन मानता है । प्रेम की परिणिती वह विवाह में नहीं मानता, बल्कि फ्री सेक्स में मानता है । ` सुख बने ` कहानी के कुमार और सम्बल दोनों युनिवर्सिटी में प्राध्यापक है । दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित होते है । एक दूसरे को चाहने लगते है । पर कुमार सम्बल से शारीर सुख चाहता है, लेकिन विवाह के बंधन में फंसना नहीं चाहता । सम्बल कुमार से प्रेम तो करती है, पर विवाह के पहले शारीरिक संबंध स्थापित करना नहीं चाहती ।

` सम्बल उसके हाथ अपने हाथों में लिये अधमुंदे नेत्रों से मुस्करायी,` पर डियर, ब्याह से पहले ठीक नहीं । ` और कुमार के होठ चूम लिये ।

कुमार के हाथ और स्वर शिथिल हो गये – ` विवाह की बात तो मैने कभी नहीं सोची । `

सम्बल तड़प पर फर्श पर खड़ी हो गयी । जैसे कुमार के मादक स्पर्श में बिजली की करेन्ट आ गयी हो – ` धूर्त ` चेहरा क्रोध और घृणा से विकृत । दब स्वर में फटकारा, ` लड़की का भोग ही तुम्हारा प्यार है .... धिक्कार है ऐसे कपट को ? `[४७]

सम्बल भारतीय एवं कुमार पाश्चात्य दृष्टिकोन के प्रतिनिधी है । सेक्स के प्रति स्त्री-पुरूष में होनेवाले दृष्टिभेद के संघर्ष पर ही यह कथा आधारित है । स्त्री के लिए प्रेम उसका सर्वस्व होता है, जब कि उपभोग में ही प्रेम की परिणती पुरूष देखता है ।

`तीसरी चिता` कहानी के माला और जयदेव पति-पत्नी है। जयदेव अपनी पत्नी से बेहद प्यार करता है। `माला को जयदेव ने अशेष रूप से आराध्य समझा था। उसकी कल्पना जहाँ तक जा सकती थी, उस से बहुत अधिक दूर तक माला की कमनीयता, सहृदयता और पुरूष की दृष्टि में स्त्री का चरण सौंदर्य, अन्यतम गुण - सतीत्व व्यापक था। जयदेव का मस्तिष्क और आत्मा एक निर्विकार आनंद के जगत में खो गये थे। उस जगत का प्रत्येक रूप या चिह्न था, माला का मुग्धकर रूप। `[४८] लेकिन यह रंग बहुत दिन तक ठहर न सका। जयदेव के मन में माला के चरित्र के प्रति संदेह निर्माण हो जाता है। और जब एक-बार यह शक निर्माण हो जाता है तो उसकी ओर तिरछी नजरों से देखना या उसे धमकाना आज पुरूष का लक्षण बन गया है। `पति के स्वयं व्यभिचारी होने पर भी भद्र समाज में उसके लिए गुंजाईश है परंतु जिसकी स्त्री असति है उसके लिए भद्र समाज क्या, समाज के निचले जक्के में भी स्थान नही। `[४९]

माला और जयदेव पति-पत्नी होते हुए भी एक दुसरे से बहुत दूर हो गये। लेकिन अचानक एक दिन घर को आग लग जाती है। जयदेव को बचाने की कोशिश में माला अपने प्राणों का बलिदान देती है। इस घटना के कारण माला की ओर देखने के जयदेव तथा समाज के दृष्टिकोन में आमूलाग्र परिवर्तन आ जाता है। `इस युग में माला के यों सती हो जाने से जयदेव के प्रति लोगों की श्रध्दा और सहानुभूति का ज्वार उमड पडा। सहानुभूति प्रकट करनेवालों का अंत न था। जिन लोगों ने माला के आचरण

के संबंध में कनखियों से इशारे कर गन्द फैलाया था, वे उन सब बातों को ऐसे भूल गये मानो वह प्रसंग कभी था ही नहीं। `५०` जयदेव के मन में माला के प्रति जो घृणा और विश्वास घात की भावना थी, उसमें परिवर्तन आ गया। `जयदेव के जीवन से शारीरिक रूप में लुप्त हो माला ने उस पर और भी अधिक व्यापक प्रभुत्व पा लिया। वह दिवंगत माला प्रथम प्रणय की माला की अपेक्षा भी कहीं अधिक प्रिय हो गयी। जयदेव को सूझ न पडता था, माला के बिना वह किस प्रकार जीवित रह सकेगा। ... उसका हृदय शून्य हो गया था। जो कुछ अनुभूति शेष थी उस से जिस सम्मान की पात्र माला थी, उसे अपने सिर पर ओढाया जाता देख लज्जा से उसका मन दबाजा रहा था। उपेक्षा का जो व्यवहार उसने माला के प्रति किया था, उसकी स्मृति से कलेजे को फाड डालने की इच्छा होती थी। माला के अभाव में संसार में जीवित रहाना उसे घोर विश्वासघात और महापाप मालूम होने लगा। वह अपनी दृष्टि में संसार का सबसे नीच और जघन्य व्यक्ति हो रहा था।`५१

लेकिन जयदेव को जब माला के नाम आया हुआ उसके मित्र मन्नू का पत्र पढने को मिलता है तो माला उसकी नजरों में फिरसे गिर जाती है। यह एक पत्र माला को सतीत्व के उँचे, आभामय लोक से गिरा देता है। जयदेव के मन में माला की मृत्यु के कारण विरह का जो दु:ख था, वह अपमान के दाह में बदल जाता है। उसके दिलमें अब माला के लिए कोई स्थान नहीं है। माला को आये उस पूर्जे को जलाकर `तीसरी चिता` जलाने की अनुभूति प्राप्त करता है।

पुरुष स्त्री की ओर मनोरंजन के साधन के रूप में देखता है, इस विचार को `पीपल तले की डाल` कहानी के द्वारा यशपाल स्पष्ट करना चाहते है। ब्रजनंदन अपने मित्र से मन बहलाने के लिए किसी लडकी को होटल

पर लाने के लिए कहता है। मित्र द्वारा लायी गयी लड़की इत्तफाक से ब्रजनंदन की बहन ही निकलती है। ब्रजनंदन इस घटना से क्रोधित होता है। वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उसकी बहन ऐसी बदचलन हो। तब मित्र के रूप में अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए यशपाल कहते है, `सभी औरते किसी की बहिन, बेटी या स्त्री होती है।....तुम्हारी बहिन को भी तुम्हारी तफरीह पर एतराज हो सकता है ? मर्द होने का मतलब बेशर्मी का अधिकार नही है।`[52]

`अश्लील` कहानी में मूर्तिकार मारिश शिलाखंड में नारी का शिल्प बनाता है। इस शिल्प की विशेषता यह है कि उसका उपरी और निचला भाग अदृश्य है। केवल शिला के मध्य-अधो भाग में किसी पूर्ण युवा नारी का एक उन्नत स्तन, त्रिवली पर झुकाव और नाभि से फैलता उभार दिखाया गया था। रत्नप्रभा जब पूछती है, `क्या यह कृति पूर्ण है ?` तब मारिश के मुँह से यशपाल ही कहते है, `नारी के इसी अंग में उसकी प्रकृति समाहित है। यही अंग नारी के अस्तित्व की सार्थकता के लिए पुरूष का आव्हान करता है और फिर उस फलीभूत सार्थकता का पोषण करता है।`[53] पुरूष का नारी की ओर देखने का जो अश्लील दृष्टिकोन है उसपर प्रहार करना लेखका का उद्देश्य है। नारी सिर्फ अपनी शारीरिकता के कारण सुंदर और उपयोगी नहीं है बल्कि व्यक्ति के रूप में भी उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। लेकिन पुरूष उसके व्यक्तित्व की अपेक्षा शारीरिकता को ही महत्व देता है।

पहाडी प्रदेश में प्रचलित एक कुरीति के द्वारा पुरूष का नारी की ओर देखने का दृष्टिकोन स्पष्ट किया है। `आतिथ्य` कहानी में पुरूष की दृष्टि में स्त्री एक भेट वस्तु है। जिस तरह हम अपनी कोई वस्तु किसी मित्र या मेहमान को भेट देते है। या कुछ समय के लिए उपयोग के

लिए देते है, उसी तरह इस पहाडी प्रदेश में स्त्री को मेहमानों की सेवा में रात काटनी पडती है। उसे एक वस्तु के रूप में इस्तमाल किया जाता है। कहानी का नायक रामशरण भारत सरकार के अर्थ विभाग में क्लर्क है। वह घुमने के लिए सिमला आया हुआ है। एक दिन घुमते घुमते रास्ते में ही रात हो जाती है। तब वह एक पहाडी परिवार का रात भरर के लिए मेहमान बनता है। पहाडी परिवार उसका अतथ्यि अपनी परंपरा के अनुसार अलग रूप से करता है, जिसके कारण रामशरण दुविधा में पडता है। अतिथी का आतिथ्य करने के लिए घर की युवा वधू को अतिथी के साथ रात काटनी पडती है। परंपरागत समाज रूढि और प्रथाओं के पालन में स्त्री की कुर्बानी देता है। उसे अनैतिक काम करने के लिए बाध्य करता है।

पुरूष नारी को अपनी एकमात्र संपत्ति समझता है, उस पर वह अपना एकाधिकार जताना चाहता है। `तीस मिनिट` कहानी प्रेम के त्रिकोणात्मक संबंध पर आधारित है। रत्ना और गुप्ता तथा राज और सिन्हा पति-पत्नी है। दोनो परिवारों की आपस में अच्छी जान-पहचान है। दोनों परिवारों की मैत्री इतनी गहरी हो जाती है कि रत्ना और सिन्हा अपने अपने साथीदारोंको छोडकर एक दूसरे से प्रेम करने लगते है। परिस्थिति यहाँ तक बिगड जाती है कि दोनो एक दूसरे के बिना रह नहीं सकते। नयी गृहस्थी बसाने की बात सोचते है। राज यह ब सब जानते हुए भी पति के संतोष के लिए सब कुछ सहती है तथा रत्ना और सिन्हा की मदद ही करती है। `मै उसकी और तुम्हारी सहायता जैसे पहले करती थी, वैसे ही करने के लिए तैयार हूं, बल्कि इससे भी जादा। मै पर्दा बनकर रहूंगी तो गुप्ता की मजाल नहीं कुछ बोल सके।`५४

लेकिन राज लाल नामक दूसरे व्यक्ति से प्रेम करती है और वह उसके साथ रहना चाहती है। यह बात सिन्हा को अखरती है। जो सिन्हा अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी स्त्री के साथ भाग जाना चाहता है, उसी सिन्हा की पत्नी राज जब लाल नामक व्यक्ति के साथ रहना चाहती है तो सिन्हा को बुरा लगता है और वह तड़पकर कहता है, `अपनी औरत की इज्जत का सौदा करूं ?`[55] स्पष्ट है सिन्हा रत्ना को परायी औरत ही मानते है और उसका उपयोग सिर्फ मन बहलाने के लिए ही करना चाहते है। पुरूष का स्त्री की ओर देखने का यह स्वार्थी दृष्टिकोन स्पष्ट होता है।

`एक सिगरेट` कहानी में भी नारी की ओर देखने का पुरूष प्रधान समाज का पारंपारिक दृष्टिकोन स्पष्ट हुआ है। दमती और ब्रजदत की शादी हो चुकी है। ब्रजदत्त छावनी से छुट्टी लेकर घर आता है। घर आते वक्त वह माता-पिता तथा दमती (दमयंती) के लिए धोती लाता है और बचे हुए पैसे माता-पिता को देता है। लेकिन पैसे कम मिलने के कारण माता-पिता नाराज होते है। ब्रजदत्त छावनी वापस जाने के बाद इसका गुस्सा दमती पर निकालते है। उसे गाली-गलौच की जाती है। भूखा रखा जाता है। ऐसी स्थिति में दमती पति-प्रेम से सिगरेट पीकर उसके सामीप्य का अनुभव करती है। घरवाले दमती की इन हरकतों को देखकर उसे बाजारू औरत मान बैठते है और उसे घर से बाहर निकाल देते है। बेसहारा, असहाय, तथा भोली दमती दर-दरकी ठोकर खाती हुयी अपने पति से मिलने के लिए छावनी की ओर आती है। पर दुर्भाग्य से वह ऐसे लोगों के जाल में फंसती है जो औरत को बाजार में खड़ा करना चाहते है। दमती पर लगाये गये आरोपों को सुनकर उसका पति भी उसे स्वीकारने से इन्कार करता है। ऐसी स्थिति में परिस्थिति से विवश होकर, सब ओर से निराश होकर दमती अपने आप को बाजार में बेच

देती है। नारी को सिगरेट जैसी एक मुँहसे मुँह चूमने के लिए बाध्य करनेवाली इस समाज व्यवस्था पर यशपाल ने आघात किया है। दमती की व्यथा एक नारी की व्यथा नहीं है बल्कि समूची नारी जाति का आक्रोश है।

' नारी की ना ' नारी के संकोच और ' ना ' पर पुरुषों के आसक्त होने का रहस्य सुलझानेवाली कथा है। इस कहानी में यशपाल ने अलौकिक कथावस्तु के आधारपर लौकिक जीवन की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। विश्वामित्र की उग्र तपस्या से इंद्रलोक चिंतित हो उठता है और उनकी तपस्या को भंग करने के लिए स्वर्ग की सर्वोत्कृष्ट अप्सरा मेनका को पूरी तैय्यारी के साथ पृथ्वी पर भेज दिला जाता है। मेनका ने यहाँ आकर अपनी सहायता के लिए एक युवती को दासी के रूप में रख लिया। विश्वामित्र की तपस्या भंग होती है पर मेनका के नृत्य और सौंदर्य से नहीं बल्कि पृथ्वी लोक की नारी से। विश्वामित्र का पृथ्वी की नारी की ना पर लुब्ध होना दिखाकर उसके माध्यम से पुरुष का नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। कामदेव के शब्दों में, ' मर्त्यलोक का नर अभाव की आशंका में परिग्रह करता है। वह सामाजिक संपत्ति और सुरक्षा में विश्वास नहीं करता। वह निजी संपत्ति संचय करता है और उसे अपने उत्तराधिकारी को सौंप जाना चाहता है। उसे चिंतारहती है कि उत्तराधिकारी स्वयं उसका ही औरस हो। नारी किसी अन्य पुरुष से गर्भधारणा न कर सके। ऐसी आशंका का निश्चित उपाय करने के लिए उसने नारी को भी व्यक्तिगत संपत्ति बना लिया है। पुरुष अहंकार में अपने को भोक्ता स्वामी और नारी को भोग्या समझने लगा। नारी का चातुर्य उसे आशंका का कारण और नारी की अपनी कामेच्छा असतीत्व उत्पन्न करनेवाली उच्छृंखलता प्रतीत होने लगी। वह नारी के काम से त्रास प्रकट करने को उसकी सात्विकता और उसके मूर्खता के नाटय को सरलता जानने लगा।'[५६]

पुरूष अपने आप को स्त्री से ऊंचा या श्रेष्ठ समझता है। वह पत्नी को बराबर का स्थान देना नहीं चाहता। वह पत्नी से प्रेम करता है लेकिन उसे दासी ही बनाये रखना चाहता है। नवविवाहित पति को जो सीख दी जाती है वह भी इसी मनोवृत्ति को स्पष्ट करती है। कन्हैयालाल को समझाते हुए हेमराज कहता है, ` बहू को प्यार तो करना ही चाहिए पर प्यार में उसे बिगाड देना या सिर चढा लेना भी ठीक नहीं। औरत सरकश हो जाती है तो आदमी को उम्रभर जोरू का गुलाम ही रहना पडता है। उसकी जरूरत पूरी करो पर रखो अपने काबू में। मारपीट बुरी बात है पर यह भी नहीं कि औरत को मर्द का डर ही न रहे। डर उसे जरूर रहना चाहिए।... मारे नहीं तो कमसे कम गुर्रा तो जरूर दे। तीन बात उसकी मानो तो एक में न भी कर दो। यह न समझ ले कि जो चाहे कर या करा सकती है। उसे तुम्हारी खुशी नाराजगी की परवाह रहे। `५७

` कुछ समझ न सका ` कहानी प्रेम के त्रिकोणात्मक संबंध पर आधारित है। इस कहानी के द्वारा यशपाल वर्तमान समाज व्यवस्था में नारी के वास्तविक स्थान पर प्रकाश डालना चाहते है। आज की समाज व्यवस्था में नारी पुरूषों की दया पर जीनेवाली, पुरूष के अत्याचारों को सहनेवाली दासी मात्र है। पुरूष को छोडकर उसका कोई अलग अस्तित्व ही नहीं है। इस तथ्य को लेखक सुजाता के माध्यम से स्पष्ट करना चाहता है। व्यास का कथन इस संदर्भ में द्रष्टव्य है, ` पुरूष स्त्रियों पर अत्याचार कुछ भी नहीं करते। केवल अपनी आवश्यकता के अनुसार उनका उपयोग करते है। पुरूषों के लिए उपयोगी होने के कारण ही स्त्रियों की कद्र और उनका ध्यान रखा जाता है। जब स्त्री पुरूष की इच्छा या आवश्यकता की उपेक्षा कर केवल अपनी कद्र और खातिर करवाना चाहती है तो अलबत्ता स्त्री को ढंग पर लाने के लिए पुरूष को कुछ अनुशासन काम में लाना पडता है`। `५८

` सब की इज्जत ` कहानी में पुरूष वर्ग के अहंकार का वर्णन है । साथ ही नारी को हेय मानने की स्वार्थी वृत्ति की और भी हमारा ध्यान आकर्षित किया है । उत्तरा पत्रकार व्यास से प्रेम करती है । एक दिन जब घरमें माता-पिता, भाई कोओ नहीं होते है, तब उत्तरा व्यास को अपने घर पर बुलाती है । उन दोनों में बातचित चल ही रही है तभी उत्तरा के भाई यशवंत खन्ना अचानक घर आते है । स्थिति को समझाकर वे अपनी इज्जत बचाने हेतु व्यास पर चोरी का झूठा इल्जाम लगाते है और पुलिस को आमंत्रित करते है । पुलिस इन्स्पेक्टर को जब पता चलता है कि यह सब नाटक है, तब वे आपसी समझौता करने की सलाह देते है । पर दोनो अपनी-अपनी प्रतिष्ठा पर अडे रहते है । दोनों को उत्तरा की बेइज्जत का कुछ भी ख्याल नहीं है । वह बेचारी सोचती रहती है, ` इन के लिए खानदान की इज्जत की तुलना में मेरा कुछ मूल्य नहीं । अपने व्यक्तित्व के सम्मान के सम्मुख भी मेरा कोई अस्तित्व नहीं । सब की इज्जत है, लडकी की इज्जत कुछ नहीं । `५९ जिस तरह पुरूष की इज्जत होती है, उसी तरह नारी की भी इज्जत होती है । लेकिन पुरूष अपने मान-सम्मान के लिए, अहंकार और स्वार्थ की पूर्ति के लिए नारी की इज्जत को खुले आम नीलाम होते देख सकता है ।

` शर्त ` कहानी द्वारा पुरूष वर्ग की ईर्ष्याग्रस्त धारणा पर यशपाल ने तीखा व्यंग्य किया है । आज के समाज में किसी प्राकृतिक होकर भी लोग उसे अनैतिक मानते है । पर ऐसे ही किसी स्त्री का झुकाव अपनी तरफ होने का पता चलने पर उसे ही वे लोग स्वाभाविक एवं नैतिक मानते है । संतू पद्मा को बदनाम औरत समझाता है । उसका चाल चलन उसे अच्छा नहीं लगता । वह कहता है, ` कोई मर्द उसके घर आये, वह कूद-कूद कर उसके आगे पीछे नाचने लगेगी, बिल्कुल कुतियों की तरह । `६० लेकिन उसी पद्मा की किताब में जब संतू को अपना फोटो मिलता है, तब यही

पद्मा उसे अच्छी लगती है। उसके विचारों में ` कम से कम उसके (पद्मा) स्वभाव में बनावट नहीं है। `[६१] अंत में संत् के द्वारा यशपाल यही स्पष्ट करना चाहते है कि,` अच्छा बुरा कुछ नहीं, सब समझ का खेल है। `[६२] पुरूष का नारी जाति की ओर देखने का यह पारंपारिक पूर्वग्रहित दृष्टि-कोण हीं उसे बदनाम करता है।

` अपनी चीज ` कहानी पुरूष द्वारा स्त्री को निजी संपत्ति मानने की प्रवृत्ति पर प्रहार करती है। यह नारी पराधीनता की कहानी है। पुरूष वर्ग की संकीर्णता की शिकार बन नारी को जिंदगी भर घुलघुलकर मर जाना पडता है फिर भी उसकी इच्छा का आदर इस पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में कभी नहीं होता। अपनी इस विचारधारा को यशपाल ने कर्नल कौशिक, मेजर डा. चौहान तथा उसकी पत्नी आलोक के प्रेम संबंधों के संघर्ष के द्वारा चित्रित किया है। डा. चौहान जो पुरूष वर्ग के प्रतिनिधी है, यह बर्दाश्त नहीं कर पाते की अपनी चीज (पत्नी) पर किसी दूसरे का अधिकार हो।

पुरूष स्त्री को अपनी संपत्ति मानता है, इस बात को यशपाल ने ` होली नहीं खेलता ` इस कहानी में बैजल और ज्योत्स्ना के वार्तालाप से स्पष्ट किया है।

` अधर्मुदी आँखों से कठोर दृष्टि ज्योस्ना के चेहरे पर डाल, उसने धीमे परंतु रूखे स्वर में कहा, ` संतोष अपनी ही वस्तु से होना चाहिए.... पराई चीज से नहीं। ` ज्योस्ना का चेहरा लाल हो गया.... ` स्त्री, पुरूष की संपत्ति होती है ? ` उसने घूरकर पूछा। ` होती है ` ... निश्चल रहकर बैजल ने उत्तर दिया। ` पुरूष को परस्पर एक दूसरे की सम्पत्ति के अधिकार की रक्षा करनी चाहिए। `[६३]

` अपना अपना एतकाद ` कहानी में नारी को संतान निर्मिती का मशीन माननेवाली पुरुष-सताक समाज व्यवस्था में वंध्या स्त्री की कोई कीमत नहीं होती इस विदारक सत्य को स्पष्ट किया है ।

` सीमा का साहस ` कहानी में नारी के प्रगतिशील एवं साहसी होने पर समाज द्वारा उठायी जानेवाली आपत्ति का चित्रण है । नारी का धर्म है सामाजिक बंधनों में पडे रहना तथा नारीकी मर्यादाओं का पालन करना । ऐसा यदि वह नहीं करती तब उसकी स्थिति उस कौवे की तरह दुर्दमनीय बन जाती है, जिसे बिरादरीका होकर भी बाकी कौवे छूते नहीं और अपने चोंचो के आघात से आहत कर देते है । सीमा का चरित्र एक ओर पारंपारिक बंधनों को ठुकरा देने से साहसी है तो दूसरी ओर आंचल की मर्यादा का ख्याल न रखने के कारण आलोचनात्मक है । नारी द्वारा नारी का उत्पीडन और भर्त्सना का चित्रण करते हुए कहा है, ` मै मर गयी, देख तो हौसला, कूद पडी, यह भी नहीं सोचा कि कपडे उडने लगे तो..... पेटीकोट दिखने लगा । .... आग लगे ऐसे हौसले में, मर्दों से बढ गयी । आंगन से जीना चढकर आई तो सिर और बदन पर साडी कहाँ थी ? सारे मर्द देख रहे थे । बाबा, हमसे ऐसा कभी नहीं हो सकता....चाहे मर जाये । `[६४]

पुरुष के अत्याचारों से पीडित पराधीन नारी :

` छलिया नारी ` कहानी में स्त्री की दासता की शोकांतिका को चित्रित किया है । नंदो देहात की सीधी-सादी सुंदर युवती है । वह अपने होनेवाले पति के सुंदर स्वप्न सजाती है । उसकी शादी शहरी बाबू विनोद सिंह से हो जाती है । शादी के तुरंत बाद विनोद सिंह के व्यवहार

के कारण नंदों के सारे सपने टूट जाते है। वह जीवन की उठती उमंगों की कामना करते हुए आयी थी, लेकिन यहां आकर जीवन की समाप्ति की चाह मन में आने लगी। विनोद सिंह का रोबिला स्वभाव, डांट-फटकार और मानसिक यातना को वह ज्यादा दिन सह नहीं सकती। इस परेशानी से बाज आकर वह घर से निकल जाती है। नंदों के भाग जाने पर विनोदसिंह को उसकी अनुपस्थिति बार-बार खटकने लगती है। वह विरक्त भाव से जोगी बन जाता है। एक तीर्थयात्रा में इत्तफाक से उसे नंदों के दर्शन होते है। वह नदी के प्रवाह में बह रही थी। विनोदसिंह उसे बचाने की कोशिश करता है, लेकिन जैसे ही नंदो देखती है कि उसे बचानेवाला उसका पति है, वह उसका हाथ छोडकर पानी में डूब जाती है। जीवित रहकर पति के अत्याचार सहने की अपेक्षा वह मृत्यु को अपनाना पसंद करती है। प्रस्तुत कथा के द्वारा यशपाल ने नारी जाति पर पुरुषों द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

`उतरा नशा` कहानी में निर्मला के द्वारा अत्याचार पीडित नारी की वेदनाओं को प्रकट किया है। नारी को हमेशा पुरुष की डांट सुननी पडती है। चौके-चूल्हे की परिधि में नारी का व्यक्तित्व विकसित नहीं होता। नारी सिर्फ कहने के लिए घर की स्वामिनी है। उसकी स्थिति धोबी के कुत्ते से भी बदतर है, वह न घर की न घाट की रह जाती है।

`प्रेम का सार` कहानी पुरुष द्वारा स्त्री पर किये जानेवाले निर्मम अत्याचारों की कहानी है। इसमें रफिया और फज्जा की प्रेम कथा है। रफिया का जीवन स्त्री की प्रेम साधना की कहानी है। वह चौबीस साल तक दिन-रात मेहनत करती हुयी पति का इंतजार करती रहती है। उसे

समय-समय पर पैसे भेजती रहती है। बार-बार चिठ्ठी लिखकर उसे बुलाती है, पर वह कभी भी वापस नहीं आता। इसी कारण वह उसे ढूंढते हुए लाहोर पहुँचती है। मन ही मन सोचती है, `मै थक गयी। काम चौपायों और खेती का अब नहीं होता। मेरा क्या मै खतम हो गयी। जिसके लिए इतना सहा....। उसे ढूंढकर पूछुँगी....बता तू घर क्यों नहीं हमारे बाल-बच्चे न सही हम चार दिन साथ रहेंगे। जो पहले पूरा होगा दूसरा उसको मिट्टी देगा। `६५ पर इतनी एकनिष्ठता के बावजूद जब वह देखती है कि उसका पति धोखेबाज, दगाबाज एवं जलील निकला, तो वह कहती है, `मै उसका मुंह नहीं देखूंगी। `६६ प्रस्तुत कहानी के द्वारा यशपालने नारी सुलभ भावनाओं को स्पष्ट करने की चेष्टा की है। जिसमें प्रतिक्षा साहचार्य की भावना, मिलनाकांक्षा एवं सन्तानोत्पत्ति की लालसा जैसी नारी की सहजात वृत्तियों का चित्रण बडे ही सूक्ष्म ढंग से हुआ है।

`जहाँ हसद नहीं` नारी की पराधीनता की कहानी है। सआदत और नूरहसन पति-पत्नी है। दोनों का संसार अच्छा चल रहा है। लेकिन दोनों के बीच में तीसरा आदमी आता है जिसके कारण एक सुखी और संपन्न परिवार टूट जाता है। सआदत का पति के होते हुए हबीब की ओर आकर्षित होना परंपरागत समाज की दृष्टि से अनैतिक है। लेकिन यशपाल उसे स्वाभाविक मानते है। एक ओर पति और दुसरी ओर प्रेमी इन दोनों के बीच में सआदत है। वह दोनों को एक साथ प्राप्त करना चाहती है, जो प्रत्यक्ष जीवन में असंभव है। इसी कारण अपने आप को मरवा देती है। अपने मन की बात को स्पष्ट करते हुए वह पति से कहती है,` यह जिंदगी का रोग है, जिंदगी के साथ जायगा। `६७ और मृत्यु का स्वागत करती है। उसका मरते समय अपने खून से `हबीब` लिखना तथा हत्या के अपराध से पतिको मुक्त रखना उसके चरित्र को उज्वल बनाता है। यशपाल के विचारों में प्रेम और सेक्स की भावना पर सामाजिक बंधन अपनी रूढिग्रस्तता का प्रमाण है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

` मेरी जीत ` नारी की पुरूषाधीनता की कहानी है। पति की इच्छा के आगे पत्नी को अपने निजी शौक, इच्छाएं सभी कुछ न्योछावर करने पडते है। प्रस्तुत कहानी की पत्नी पति की अनुमति के बिना एक कुत्ता पालती है। यह बात पति को पसंद नहीं है। पति की नाराजी देखकर पत्नी कुत्ते को माली के घर रख देती है और पति की अनुपस्थिति में अपने शौक को निभाती है। जब यह राज पति को मालूम होता है तब वह विव्हल होकर कुत्ता घर में रखने की अनुमती देता है। वह कुत्ता ही उसका सर्वस्व हो जाता है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से यशपाल ने मानो समस्त स्त्री जाति को पति पर विजय पाने की कुंजी प्रदान की है। लेखक ऐसी जीत को जीत नहीं मानता जिसमें अस्तित्व एवं प्रतिष्ठा का विलय हो। ` स्त्री यदि जीतना ब चाहती है तो उसका उपाय है हारते चले जाना। उसकी अपनी इच्छा कोई न हो....उसकी अपनी राय कोई न हो तो वह सुखी रह सकती है। परंतु यह सुख और जीत कैसी ?.... ऐसीकि जीतने की इच्छा कभी न करे.... अपने को कुछ न समझे। `६८ पुरूष सत्ताप्रधान इस समाज व्यवस्था में नारी दिन बिताती है, सब इच्छाओं का दमन कर। पति का सुख ही उसका सुख होता है। ऐसी व्यवस्था में नारी के अलग अस्तित्व पर निरंतर पुरूष का अंकुश बना रहता है। इस प्रवृत्ति पर व्यंग्य करना एवं पुरूषों की दासता की श्रृंखला से उसे मुक्त करना यही कहानी का उद्देश्य है।

` दुसरी नाक ` कहानी में पुरूष के स्त्री जाति पर होनेवाले निरकुंश सत्ता का यथार्थ चित्र खींचा है। जब्बार शब्बू की जवानी और सौंदर्य से पागल होकर उसी के साथ शादी करने की जिद करता है। अपने बेटे की जिद को पूरा करने के लिए गफ्फार को दो उंट बेचने पडते है। परिणामत: अपना चरितार्थ चलाने के लिए जब्बार को पास के शहर में जाना

पडता है, लेकिन वहाँ उसका मन नहीं लगता । वह छीपकर गाव में आकर शब्बू को जी भर देखता रहता है । लेकिन शब्बू का बन-ठनकर रहना, अपनी उछलती हुयी जवानी का प्रदर्शन करना और गैर मर्दों का उसकी ओर आकर्षित होना जब्बार बर्दाश्त नहीं कर सकता । उसके मन में अपनी पत्नी के चरित्र के प्रति संदेह निर्माण होता है । जब्बार के इस आरोप को शब्बू सह नहीं सकती । वह जबाब देती है, ` मैने कभी किसी मर्दे की तरफ आँख उठाकर भी देखा हो तो मै मर जाऊँ, नहीं तो मुझपर झूठा इल्जाम लगानेवाले मर जाये ।`६९

लेकिन एक बार जब संदेह मनुष्य के मन में घर कर लेता है तो वह उसे समाप्त करके ही जाता है । जब्बार की स्थिति कुछ ऐसी ही हुयी थी । इसका वर्णन करते हुए यशपाल लिखते है, ` जब्बार बहुत सतर्कता से शब्बू पर निगाह रखने लगा । शब्बू से सौ कदम दूर भी आदमी देख लेता तो जब्बार को संदेह हो जाता कि आदमी शब्बू से आँखे लडा रहा था । ईर्ष्या और चिंता में उसका खाना-पीना हराम हो गया । किसी मुसाफिर को गाव में गुजरते देखकर भी उसे यह शंका होती कि संभव है शब्बू के रूप की ख्याति सुनकर ही वह आदमी बहाने से इधर आया था । उसे सारा गाव शब्बू के पीछे पागल दिखाई पडने लगा ।`७० शब्बू के जिस सौंदर्य से पागल होकर जब्बार ने उससे शादी की थी, वही सौंदर्य अब उसे खलने लगा । इससे बचने का एकमात्र अघोरी उपाय उसने ढूंढ लिया और अपनी सुंदर पत्नी की सुंदर नाक काट डाली । उपचार के उपरांत वह अपनी पत्नी को रबर की नाक लगाने के लिए इस शर्त पर तैय्यार हो गया कि, ` शब्बू नाक लगायेगी जरूर लेकिन गैरमर्द उसे घूरेगा तो झट नाक उतारकर जेब में डाल लेगी ।`७१

नारी की पराधीनता का वास्तविक चित्रण करना ही कहानी का उद्देश्य है। पुरूष नारी को अपनी वैयक्तिक संपत्ति मात्र मानता है। उसके अचार-विचार, रहन-सहन इतना ही नहीं उसके जिस्म और सौंदर्य पर वह अपना एकमात्र अधिकार मानता है। वह किस प्रकार रहे और जिये यह सब पुरूष ही निर्धारित करता है। जब शब्बू को रबर की नाक लगवाने की बात सुनता है तो इसका विरोध करते हुए कहता है, `बस रहने दो, हमे नाक नहीं चाहिए। मुझे तू बिना नाक के ही भली लगती है। तुझे क्या नाक औरों को दिखानी है।`[72] पुरूष के अहंकार के आगे स्त्री की कोई नाक नहीं होती। वह पुरूष की लौंडी मात्र है। आज के पुरूष प्रधान समाज में नारी की कीमत बाजार के किसी जानवर से जादा नहीं है। स्त्री पर होनेवाले अत्याचार को यशपाल ने बहुत ही मार्मिकता से चित्रित किया है। इतना ही नहीं स्त्रियों की ओर देखने का पुरूष का दृष्टिकोन कितना स्वार्थी, एकांगी और वासनाजन्य है इसकी ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित किया है। जब्बार का बूढा पिता अपनी पत्नी से कहता है, `अरे तू बूढी हो गयी, तू ही बता, चेहरे का रंग जरा ढका हो तो क्या, उघडा हो तो क्या ? औरत औरत सब एक है। तुझे औरत के काम से मतलब है कि रंग से।`[73]

`गवाह` कहानी नारी पर पुरूष के एकाधिकार की प्रवृत्ति को चित्रित करती है। वकील पन्नालाल सक्सेना खुद ख्याली खुशहाली में दिन बिताते रहते है। अपने मन को वे सदैव रिझाने में सतर्क रहते है पर अपनी पत्नी की आशा-आकांक्षाओं का कभी ख्याल तक नहीं करते। बल्कि कभी-कभी उसे डाँटते भी है। `ऐसे ही मेम साहब बनना था तो विलायत में शादी की होती या ईसाइन बन जाती।`[74] ऐसे झगडों के बाद सुलह होती तो वकील साहब गौरी को समझाते, `जब दुनिया में रहना है तो

दुनियादारी निभानी ही पडती है, चार आदमियों के यहाँ उठना बैठना होता ही है। सब जगह सब तरह के लोगों में तुम्हे कैसे लिये फिरे ?.. घर के स्त्रियों की एक मर्यादा होती है। सम्मान होता है। कोई बेहूदा बात उनके सामने बक दे तो क्या किया जाय ? शरीफ आदमी का तो मरना हो गया।`७५ इस प्रकार पन्नालाल अपनी पत्नी को समझाते रहते है। उसे उठने-बैठने के लिए पास पडोस में जाने की सलाह देते है। लेकिन एक दिन उनकी पत्नी गौरी उन्हें एक पार्टी में दिखायी देती है उसके इस व्यवहार को वे अनुचित मानते हुए गुस्से से आग बबूल हो जाते है। उनके मन में तरह-तरह के विचार आ जाते है। उस हरामजादी की चुटिया पकडकर लातों से उसकी जान निकाल देनी चाहिए। ऐसी इज्जत बिगाडनेवाली दगाबाज, बदमाश औरत को कत्ल कर देने के सिवा और क्या सजा हो सकती है ? पुरूषों की इस एकांगी मनोवृत्ति का चित्रण पन्नालाल के चरित्र के द्वारा करना ही लेखक का उद्देश्य है।

`पतिव्रता` कहानी पतिव्रता नारी की पराधीनता का चित्रण करती है। भारत में लडकी को बचपन से ही ये संस्कार मिलते है कि वह अपने पातिव्रत धर्म का पालन करे। सुमती ऐसी ही एक पढी लिखी लडकी है जो पति धर्म निबाहना ही लक्ष्य मानकर दिन बिता रही है। घरवालों की इच्छा के अनुसार वह एक अमीर व्यक्ति से शादी करती है। नौकर-चाकर बंगला, गाडी सब सुख सुविधाएँ होती है। पर पतिकासच्चा पार नहीं होता। उसके पति निहार नामक नारी के पीछे पागल हो गये है। तब सुमती अपेक्षा भंग से निराश होकर नीहार से बाते करती है। तब नीहार उसे बता देती है कि सेठ का धन उसे ही मुबारक हो। क्योंकि सेठ पायरिया के मरीज है। नीहार पैसे के लिए भी ऐसी बदबू मोल लेना नहीं चाहती।

इस कहानी के द्वारा लेखक यही स्पष्ट करना चाहता है कि वह वेश्या के लिए आत्मनिर्भरता की गुंजाईश है, वह अपनी इच्छा के अनुसार अपना साथी चुन सकती है। पर हमारे रूढ़ी प्रिय समाज में पातिव्रत्य के नाम पर शादी-शुदा नारी के लिए ऐसा स्वातंत्र्य नहीं है।

`मार का मोल` कहानी में दो अलग-अलग नारियों का चित्र उपस्थित किया है। एक नारी विवाहित है, लेकिन उसके गालों पर पंजे की निशानी है, जिससे स्पष्ट होता है कि पति ने उसके गालों पर चपत लगायी है। उसने उस मार को बिना विरोध के स्वीकार किया है। दूसरी और एक वेश्या नारी है, जो पैसे न देने पर पुरुष के गालपर चपत लगाने का साहस करती है। क्योंकि वह आत्मनिर्भर है। दोनों नारियां पराधीन है, एक वैवाहिक बंधन के कारण और दूसरी आर्थिक परिस्थिति के कारण।

नारी को असहाय और अकेली देखकर उसपर किस तरह अनैतिक काम के लिए जबरदस्ती की जाती है, इसका चित्रण `भगवान का खेल` कहानी में है। अमला विधवा है। तीन महिने के बच्चे की परवरिश करना ही उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। वह नृत्य में प्रवीण है। बिहार रिलीफ फंड के लिए अमला नृत्य का कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। नाचने-गानेवाली स्त्रियां पुरुष के मनोरंजन का साधन होती है और प्रत्येक नाचने गानेवाली वेश्या होती है। यह समझकर एक गुंडा उसे बहकाकर ले जाता है और ग्राहक के सामने पेश करता है। ग्राहक और कोई नहीं होता, अमला जिस कंपनी में टायपिस्ट है, उस कंपनी का मैनेजिंग डायरेक्टर ही होता है। अमला अपनी सारी मजबूरियां बताकर इज्जत बचा लेती है। यशपाल ने इस कहानी में नृत्य आदि कला क्षेत्र में काम करनेवाली नारियों के प्रति होनेवाले सामाजिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। साथ ही प्रतिष्ठित बनकर रहनेवालों का पर्दापाश किया है।

' मंगला ' सामाजिक व्यवस्था और कानून के पंजों मे पीसी जानेवाली नारी की समस्या का उद्घाटन करती है। पति की उपेक्षा और सास के अत्याचारों के कारण उसका जीवन बोझिल बन जाता है। वह सब कुछ छोडकर जोगिन बनना चाहती है, या आत्महत्या करना चाहती है। ऐसे ही समय उसके दु:ख को समझाकर, उसे सहारा देनेवाला शोभा मिलता है। लेकिन वह भी परिस्थिति के कारण दूर हो जाता है। क्योंकि शिल्पकार जैसे नीच जाति के लागों ने एक ब्राह्मणी को भगाया है यह बात हिंदू समाज के लिए अपमानजनक थी। उसी समय मंगला एक मुस्लिम परिवार में आश्रय लेती है। एका ब्राह्मण युवती को मुस्लिम परिवार में देखकर धर्मप्रेमियों का माथा ठनक उठा। उन्होंने उसे वहां से बाहर निकाला और विधवा आश्रम में भेज दिया। यह हिंदू)समाज खुद तो मंगला को सहारा देने के लिए तैयार नहीं था और अन्य जाति के लोग मानवता की दृष्टिसे उसे सहारा देना भी चाहते है तो ये बीच में आ जाते है। लेखक कहता है, ' मंगला कानून से जीत गयी, परंतु समाज द्वारा नहीं। कुछ ही दिन बाद उंची जात की धमकी से डरे हुए अल्मोडा के मेहतरों की पंचायत हुयी। '७६ और मंगला को गुलाब मेहतर के घर से निकाल दिया गया। इस तरह मंगला समाज की रूढियों और कानून की कट्टरता की शिकार हो गयी।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

संदर्भ

१. अभिशाप (कथासंग्रह), यशपाल, पृ. ३९.
२. वहीं
३.
४. पिंजरे की उडान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ११९.
५. वहीं.
६. उत्तराधिकारी (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ११३.
७. वो दुनिया (कथा संग्रह), यशपाल,पृ.६०.
८. तर्क का तूफान (कथासंग्रह), यशपाल, पृ. ११२.
९. पिंजरे की उडान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. १२९.
१०. भस्मावृत्त चिनगारी (कथासंग्रह), यशपाल, पृ. ११०.
११. वहीं
१२. उत्तमी की माँ (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ६९-७०.
१३. उत्तराधिकारी (कथा संग्रह), यशपाल,पृ.४४.
१४. तर्क का तूफान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. १४-१५.
१५. वहीं, पृ.१७.
१६. खच्चर और आदमी (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ३३-३४.
१७. चित्र का शीर्षक (कथासंग्रह), यशपाल, पृ.२६.
१८. वहीं, पृ. २६-२७.
१९. ज्ञानदान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ६४.
२०. तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूं। (कथा संग्रह), यशपाल, पृ.१५.
२१. अभिशप्त (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. १००.
२२. तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूं। (कथा संग्रह), यशपाल, पृ.९४-९५.
२३ .वहीं.

२४. ज्ञानदान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. १०२.
२५. वहीं, पृ.१०२
२६. ज्ञानदान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ३५.
२७. वही, पृ. ३६.
२८. भस्मावृत्त चिनगारी (कथा संग्रह) यशपाल, पृ. ६६.
२९. वो दुनिया (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ८०-८१.
३०. वही,पृ. ८२.
३१. वो दुनिया (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ८५.
३२. वहीं.
३३. तर्क का तूफान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. १६.
३४. फूलों का कुर्ता (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ६८.
३५. उत्तमी की माँ (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ९.
३६. वहीं, पृ.१३.
३७. वहीं, पृ. १५.
३८. वही, पृ.१६.
३९. वही, पृ.१७.
४०. वही.
४१. ओ भैरवी, (कथासंग्रह), यशपाल, पृ.२०.
४२. तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूँ (कथा संग्रह), यशपाल, पृ.१०६.
४३. वहीं, पृ.११६.
४४. वही, पृ.११६
४५. भस्मावृत्त चिनगारी (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ७०.
४६. ज्ञानदान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ८८.
४७. भूख के तीन दिन (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. १३२.

४८. पिंजरे की उडान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ.९२.
४९. वही, पृ.९३.
५०. वही, पृ. ९५.
५१. वही.
५२. चित्र का शीर्षक (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ८६.
५३. खच्चर और आदमी (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ७६.
५४. तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूं (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ६४.
५५. वही.
५६. सच बोलने की भूल (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ९६-९७.
५७. उत्तमी की मा (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ७९.
५८. ज्ञानदान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ४०-४१.
५९. ओ भैरवी, (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ११४.
६०. पिंजरे की उडान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ८७.
६१. वही, पृ.९१.
६२. वही, पृ. ९१.
६३. तर्क का तूफान (कथा संग्रह), यशपाल
६४. वही, पृ.८२.
६५. पिंजरे की उडान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ५१.
६६. वही.
६७. वो दुनिया (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. १०४.
६८. तर्क का तूफान (कथा संग्रह), यशपाल, पृ.४५.
६९. वो दुनिया (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ४३.
७०. वही, पृ. ४३.

७१. वही, पृ. ४६.

७२. वही, पृ. ४६.

७३. वही, पृ. ३९.

७४. मस्मावृत्त चिनागारी (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ३०.

७५. वही, पृ.३१.

७६. धर्मयुध्द (कथा संग्रह), यशपाल, पृ. ९८.